कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः12, अंकः03 दिसम्बर 2012

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा

संरक्षक सदस्य
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया

विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0ः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

इस अंक में......

दिनकर और उनका रचना संसार............ 06
-शशिशेखर तिवारी

भारतीय संस्कारः दृष्टि मनु की.................. 09
-डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

तुलसी काव्य में सूक्तियां 12
-डॉ० शिववंश पाण्डेय

सूरदास की यशोदा.................................15
-डॉ० रेखा मिश्र

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग	04
अपनी बात	05
कविताएँ	17–24
बचपन जवानी और बुढ़ापा(कहानी) : डॉ0 कल्याणी कुसुम सिंह	25
जाल (कहानी)	26
आपकी डाक	28
साहित्य समाचार–	11, 14, 16, 30–31, 33
लघु कथा	16, 27
स्वास्थ्य	29
घरेलू सुझाव	32
समीक्षा	34

जीवन सूत्र

मानव बूढ़ा हो जाने पर छड़ी के सहारे चलने लगा है, शरीर के अंग गल रहे हैं, सिर के बाल सफेद हो गये है और मुंह के दांत भी निकल चुके हैं, किन्तु फिर भी मिथ्या सांसारिक लोभ लालच तथा जीने की इच्छा मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ती. ✍सुरजीत सिंह साहनी, गुमानपुरा, कोटा, राजस्थान

☞ईश्वर का निवास तो दीन दुखियों में होता है, उनकी सेवा ईश्वर की पूजा है.

☞इधर उधर भटकने से सुख-शान्ति का मिलना दूभर है, जिसको तू खोजता फिरता है, वह कहीं अन्यत्र नहीं है, तेरे ही भीतर है. इन्द्रियों को बस में कर, दूसरों की सेवा तथा सत्पथ का अनुसरण कर यही सच्चा सुख है.

☞ईश्वर, देवी, देवता तो आस्था एवम् विश्वास के रूप हैं. अपनी सहायता स्वयं करो. कहा भी है कि 'ईश्वर तो उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयम् करते हैं.'

☞दूसरों को आदर सत्कार देने पर, आपको भी उनके द्वारा आदर सत्कार मिलेगा.

☞किसी उद्देश्य, आकांक्षा एवम् कल्पना को पूर्ण करना एक तपस्या के समान है. उसके पाने के लिए लगन, परिश्रम, विश्वास का होना आवश्यक है. इसके अभाव में सफलता मिलना सम्भव नहीं.

☞ महान पुरुष वह है, जो प्रत्येक परिस्थितियों का सामना बहादुरी से करें. जीवन में सदा प्रसन्न चित्त रहें, चिन्ता न करें, कर्त्तव्य करता रहें, तभी वह दूसरों के लिए पथ प्रदर्शक बन सकता है. ८

☞मानव का नैतिक पतन उसके पतन का द्योतक हैं. बिना इसके सुधार के समाज में कभी भी सुधार नहीं लाया जा सकता.

☞दूसरों की दया पर जीने की अपेक्षा मरना उचित है.

☞अपने हित के लिए तमाम व्यक्ति त्याग कर लेते हैं, परन्तु जो परोपकार के लिए अपना त्याग करता है वही सच्चा त्याग है.

☞किसी कार्य को कल पर मत छोड़ो, क्योंकि कल परसों में बदली सकता है, और परसों वरषो में. इस प्रकार आपका कार्य जिसे आपने कल पर छोड़ दिया था अधूरा ही पड़ा रहेगा.

☞जवानी ऐसा अश्व है, विवेक ही जिसकी लगाम है.

✍**दाऊजी**

आदाब अर्ज़ है

"जहांपनाह! इसने रिश्वत ली है. इसे सख्त सजा दी जाय." बादशाह ने वजीर की ओर देखा और बुलन्द आवाज में पूछा-"हमारे कानून के तहत रिश्वत लेने की क्या सजा है?"

"हुजूर! कुहनियों तक हाथ कलम." कहने के साथ ही वजीर ने रिश्वत खोर की ओर सवालिया निगाहों से देखा और पूछा-क्या तुम्हारी आखिरी बार इन हाथों से कुछ करने की ख्वाहिश है?"

"जी बन्दापरवर!"

उसने जेब में हाथ डाला और बादशाह के निकट पहुंचकर अशरफियों से भरी थैली धीरे से उनकी गोद में गिरा दी. लौटकर जैसे ही कटघरे में खड़ा हुआ कि

बादशाह का फैसला सुनाया गया-जहांपनाह का हुक्म है कि इस शख्स को बाइज्जत बरी किया जाए.

✍**निहाल हाश्मी**, बगलौर, कर्नाटक

अतिथि संवाद

बिहार के साहित्यकार

बिहार का साहित्य क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है. इसका अतीत उज्ज्वल और भव्य रहा है, वर्तमान प्रचंड मार्तंड है और भविष्य तो देदीप्यमान है हीं. यहां अध्ययन-अध्यापन की लंबी परम्परा है. यहां पत्र-पत्रिकाओं की विक्री और पुस्तकों की खरीद अधिक होती है. पद्य और गद्य दोनों विधाओं में एक से एक विद्वान लेखक और कवि बिहार में हुए हैं और उनमें से कई तो राष्ट्रीय ख्याति के हैं.

काव्य के क्षेत्र में जहां एक ओर पं० सदल मिश्र, राष्ट्रकवि डॉ० रामधारी सिंह 'दिनकर', आचार्य सत्यव्रत शर्मा 'सुजन', नागार्जुन, आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री, पोद्दार रामावतार अरुण, आर.सी. प्रसाद सिंह, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', पं० दामदयाल पाण्डेय, कलक्टर सिंह 'केशरी', पं. जनार्दन झा 'द्विज', पं. गौरीशंकर मिश्र 'द्विजेन्द्र', ललित कुमार सिंह 'नटवर', आचार्य राम लोचन शरण, पं. जगन्नाथ मिश्रा गोड़ कमल, राम गोपाल शर्मा 'रूद्र', मोहन लाल महतो वियोगी, गीत के राजकुमार गोपाल सिंह नेपाली, डॉ० परमानंद पाण्डेय आदि वहीं कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह 'काम', विद्वान कवि ओर लेखक हो गये हैं. इनके अलावा डॉ. लक्ष्मी नारायण सुधाशुं, आचार्य नीलन विलोचन शर्मा 'नवीन', पं. हंस कुमार तिवारी, डॉ० कुमार विमल, डॉ० वचनदेव कुमार, रामवृक्ष बेनीपुरी, आचार्य धमेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, रामेश्वर सिंह कश्यप, आचार्य नन्द किशोर सिंह, पं. गणेश चौबे, डॉ. शंकर दयाल सिंह, डॉ० माहेश्वरी सिंह महेश, गंगा शरण सिंह, डॉ. जनार्दन मिश्र, डॉ० विष्णु किशोर झा वेचन, आनन्द शंकर माधवन, डॉ० डोमन साहु समीर, विजय नारायण मिश्र प्रशांत आदि. उल्लेखनीय साहित्यकार बिहार को गौरवान्वित करने वाले हुए हैं.

वर्तमान समय में अनेक साहित्यकार हैं जिनमें से अधिकतर का ध्वज राष्ट्र स्तर पर लहरा रहा है. उनमें प्रमुख हैं-डॉ० भगवती शरण मिश्र, आचार्य श्री रंजन सूरिदेव, पं.सियाराम तिवारी, डॉ. मधुकर गंगाधर, कविवर सत्यनारायण, डॉ० शशि शेखर तिवारी, डॉ० शिववंश पाण्डेय, श्री नृपेन्द्र नाथ गुप्त, डॉ० मेधाव्रत शर्मा, डॉ. उर्मिला कौल, श्री अरुण कमल, डॉ० मधु वर्मा, मदन कश्यप, अवधेश प्रीत, भगवती प्रसाद द्विवेदी, जर्नादन मिश्र, डॉ० दुर्गाशरण मिश्र, डॉ० लखन लाल सिंह आरोही, डॉ० शिवनारायण, डॉ० राजेन्द्र पंनियार, डॉ. कल्याजी कुसुम सिंह, डॉ० विद्या रानी, डॉ० शांति जैन, श्रीमती गिरिजा वर्णबाल, डॉ० भगवान सिंह 'भाष्कर', डॉ० राम पुनीत ठाकुर, डॉ० रेखा मिश्र, श्री विलास बिहारी, श्री पंकज कुमार देव, श्री विशुद्धानन्द, श्री रामकुमार प्रेमी, डॉ० अमरनाथ सिंह, डॉ० तेज नारायण कुशवाहा, श्री रंजन, डॉ० प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, श्री ध्रवुतांती, डॉ० सत्येन्द्रु अरूण, श्री राम उपदेश सिंह विदेह, मोहन प्रेमयोगी, श्री मृत्युजंय मिश्र करूणेश, श्री देवेन्द्र देव, डॉ० देवेन्द्र कुमार मिश्र देवेन्दु, डॉ०विनय कुमार गुप्त, श्री मथुरा नाथ सिंह रानीपुरी, डॉ० अमरेन्द्र, आचार्य आमोद कुमार मिश्र, श्री राजीव परिमलेन्दु, श्री गोपाल कृष्ण, श्री शिवदत्त मिश्र, श्री योगेन्द्र प्र. मिश्र, श्री वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज.

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के सचिव एवं राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के ;'kLohlEknd Jhxkdy;soj dqekj f}oshdksi;z.kk gbZfd ^fo'o Lusg lekt * dk fnlEcj 2012 अंक 'बिहार के साहित्यकार विशेषांक के रूप में निकाला जाय. जिसका संपादन का गुरूतर भार मुझ पर दिया गया.

द्विवेदी जी की राय हुई कि इस विशेषांक के आवरण पृष्ठ पर दिनकर जी का चित्र दिया जाय. अन्तरंग में तीन दिवंगत साहित्यकारों का परिचय, उनके चित्र एवं उनकी रचनाएँ प्रस्तुत हों और शेष पृष्ठों पर वर्तमान साहित्यकारों के जीवन-वृत, चित्र एवं उनकी रचनाएँ प्रस्तुत किये जाएँ.

मैनं प्रभु कृपा से प्रयास कर आवश्यक सामग्री का संग्रह कर इस अंक में प्रस्तुत किया है. यह काम कठिन था और खासकर मुझ जैसे अज्ञ साहित्यकार के लिए. मैं कहां तक सफल हुआ हूं आप पाठक ही हमें बताएंगें. आपके सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी.

डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर'
अतिथि सपांदक

दिनकर और उनका रचना संसार

शशिशेखर तिवारी

जन्मः १४.०१.१९३८ **शिक्षाः** भाषा विज्ञान में पी.एच.डी. **सम्प्रतिः** व्याख्याता, रीडर और प्रेफेसर. बिहार में विश्वविद्यालय सेवा आयोग के अध्यक्ष. केन्द्र सरकार के पांच मंत्रालयों के हिन्दी सलाहकार समितियों के सदस्य, साहित्य अकादमी, दिल्ली के सदस्य, अमेरिका के कैलिफोर्निया, वाशिंगटन, न्यूयार्क, टेकसॉस का भ्रमण किया. अभी तक विभिन्न विषयों पर पच्चास शोध पत्र और ५ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है.

सम्पर्कः वैशाली इनक्लेव अपार्टमेंट, गांधी पथ, गीतांजलि के समीप, उत्तरीश्रीकृष्णपुर, पटना-८०००१३

हिन्दी के महान कवि दिनकर का बिहार के अंग-जनपद से आत्मीय लगाव रहा है. मुंगेर जिला का बरबीघा नगर इनका प्रारंभिक कर्म-स्थल रहा है. लोग कहते हैं कि दिनकर ने अपनी प्रख्यात कविता 'हिमालय' का पहली बार जब इसी भागलपुर में पाठ किया था, तो उसी दिन सहृदय श्रोताओं के विशाल समूह ने उत्साह और विश्वासपूर्वक रात भर तालियों की गड़गड़ाहट से कवि की सुयश भरी भावी सफलताओं का उद्घोष भी कर दिया था. यह भी सुखद संयोग है कि अंग की धरती पर ही भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी. लिट की मानद उपाधि से वे विभूषित हुए और बाद में इसी विश्वविद्यालय के उप कुलपति के पद को सुशोभित किए. निस्संदेह राष्ट्रीय विरासत को स्पन्दित करने वाले दिनकर जी भारत के गौरव पुरुष के रूप में सदा स्मरणीय हैं.

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' आधुनिक हिन्दी काव्य-धारा की महान प्रतिभा है. इन्होंने देश के अम्लान गौरव को अपनी ओजस्वी संवेदनाओं द्वारा सृजनधर्मिता के कई आयामों पर स्पन्दित किया. राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान इनके रचे गीत कौमी तराने बने. आजादी के बाद इनकी मनस्विता भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल अध्यायों को सहेजने में सलंग्न रही. अंग्रेजी के प्रतिनिधि कवि शेली की विख्यात कविता 'स्कायलार्क' में भय की परवा किये बिना मनुष्य की अन्तरात्मा में निहित आशाओं से भरे भावों के प्रति सहानुभूति दिखाने की कवि-कर्म का दायित्व माना गया है. इन्हीं प्रसंगों के दिनकर जी लोक-समुदाय द्वारा सहजभाव से राष्ट्र-कवि के रूप में याद किए गये हैं.

तेईस सितम्बर १९०८ से शुरू होने वाली दिनकर जी की जीवन-यात्रा का उदयाचल है, उत्तरी बिहार का सिमरिया गांव और उनकी महायात्रा का विराम स्थल है, दक्षिण भारत का महानगर मद्रास. उनकी जीवन कथा में इस प्रकार भारत के उत्तरी और दक्षिणी भाग संयुक्त होकर उनके व्यक्तित्व और उनकी कृतियों के राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को अद्भुत रूप से व्यंजित करते हैं. लगता है, शैल कुमारी गंगा ने अपनी उच्छल तरंगों के उद्दाम वेग के साथ कभी गंभीर होने वाली भंगिमा से भी कवि के स्वभाव को संवारा है. दिनकर का प्रारंभिक जीवन कोयल की कूक से कूजित अमराइयों और लहराती फसलों के बीच बीता है. इसलिए गांव से चलकर दिनकर जी जब पटना, दिल्ली जैसे महानगरों में पहुंचे तो भी वे अपने गोरे-चिट्टे, लंबे-तगड़े डील-डौल को धोती-कुर्ता और कंधे पर रखने वाली चादर से ग्रामीण गरिमा देना नहीं भूलें. ऐसी वेश-भूषा धारण करते हुए वे ग्राम वासिनी भारतमाता को आजीवन मन-प्रणों में संजोए रहे. गांव की धरती

इनके भाव और भाषा में प्रमुख प्रतिरूप बनकर सोधी सुगंध और शोभा बिखेरती रही है.

दिनकर की कृतियों और स्वभाव में पौरूष-प्रेम और शौर्य-शील की द्याभा समान रूप दिखलाई पड़ती है. इनके व्यक्तित्व की विशिष्टताओं के कारण कई आलोचक इस असमंजस में रहे हैं कि दिनकर की कविता शक्तिमुखी है या विचारमुखी. कवि के समकालीन सुधी साहित्यकार कहते हैं कि दिनकर जब 'हिमालय', 'विपथगा', 'व्यालविजय' , 'परशुराम' की प्रतीक्षा आदि पौरूषभावों की कविताओं का पाठ करते थे, तो सचमुच लगता था कि सिंधु गर्जन कर रहा है और सिंह गजराज पर चिघाड़ते हुए झपट्टा मार रहा है. किन्तु, उन दिनों ही दिनकर की 'प्रीति', 'पुरूषप्रिया' आदि की कोमल रागिनी से सहृदयों में प्रेम और करूणा के न जाने कितने अनदेखे, अनजाने और अनछुए भाव उमड़ पड़ते थे. उनकी कृतियों की भाव-विविधा रचयिता के कई आंतरिक पहलुओं को उजागर करती है. इनमें व्यंजित कवि की मानसिकता और लोकनायकत्व की संपृक्तता उल्लेखनीय है. यहां ऐसा भान होता है कि कवि, मनीषी की भूमिका में निमग्न होकर भी अन्याय, प्रताड़ना, गरीबी आदि के विरूद्ध हाथ में कलम के बदले तलवार लेकर 'समरशेष है' का नारा बुलन्द कर रहा है. सभी जानते है कि दिनकर में लोक-हृदय से उपजी हुई सच्चे त्राता की ऊर्जाएं भरी-पूरी थी.

अगर एक दृष्टान्त या बिम्ब में ही दिनकर के व्यक्तित्व को रूपायित करने के लिए मुझे कहा जाय तो मैं झट 'सूर्य' का नाम ले लूंगा. दिनकर के सम्पूर्ण काव्य में सूर्य और इसके पर्याय अपने मिथकीय गूढ़ार्थो की प्रतिभासित करते है. ऐसा देखा गया है कि प्रतिभाशाली कवि कुछ खास शब्दों, चित्रों, बिम्बों, प्रतीकों और ध्वनियों का बहुल प्रयोग करते हैं. दरअसल वे ऐसी पुनप्रयुक्तियों से अपनी संवेदनाओ को सधन ही नहीं बनाते, बल्कि भाषा की पकड़ में न आने वाले तलीय अभिप्रायों को भी झंकृत करते हैं. 'उदयाचल', 'प्रभा', 'विभा', 'अनल', 'अग्नि', आदि शब्द दिनकर की कविताओं को सष्टि के अह्लादकारी प्रतिरूपों से जोड़ते हैं. इनमें मनुष्य के जय-विजय परक गौरव-गानों की अनुगूंज, पुरुषार्थ की गाथाएं और जिजीविषा के उच्छल आवेग तरंगायित हैं. कवि ने अपनी भाव-यात्रा के प्रायः सभी पड़ावों पर उत्तम पुरुष में अपनी मूल पहचान को प्रकट किया है. यहां धन-अंधकार को चीर कर अशेष आलोक बिखेरने वाले सौरमण्डल के सर्वाधिक प्रदीप्त नक्षत्र-सूर्य के रूप-प्रतिरूप भासित हुए है, यथाः

ज्योतिर्धर कवि मैं ज्वलित सौरमण्डल का, / मेरे शिखण्ड अरूणाभ किरील-अनल का/ मैं तरूण भानु-सा अरूण भूमि पर उतरा /रूद्र-विष्णाण के लिए सिर पर ले वह्नि किरीट/ दीप्ति का तेजवन्त धनु वाण लिए।

कवि 'रश्मिरथी' और 'उर्वशी' (पुरूष प्रिया) में ही नहीं, यहां तक कि आख्यानपरक काव्यों में भी नायकों को 'रश्मिरथी', 'समय-सूर्य' आदि मिथकीय अभिधानों से परिभाषित करता है, जैसे, 'जय हो जग में जले जहां भी नमन पुनीत अनल को (रश्मिरथी). उपर्युक्त उद्धरणों में दिनकर भी बंगला के विप्लवी कवि नजरूल की तरह अपनी स्मृतियों में शिव के उस रूद्र-रूप को संजोए हुए हैं, जिसे यजुर्वेद में प्राणवाचक अग्नि का साक्षात स्वरूप कहा गया है. वैदिक वाङ्मय में उर्वसी सूर्य की चिर संगिनी मानी गई ऊषा के प्रतिरूप की भांति वर्णित है. ऋग्वेद पुरूरवा को सूर्यवाचक वशिष्ट का पर्याय सिद्ध करता है. 'उर्वसी' में पुरूरवा के कंठ से अपनी मूल पहचान को उद्घोषित करते हुए दिनकर ने कहा है,-

मर्त्यमानव की विजय का तूर्य हूँ मैं/ उर्वसी! अपने समय का सूर्य हूँ मैं।/ अंधतम के भाल पर/ पावक जलाता हूँ,/ बादलों के सीस पर स्पन्दन चलाता हूं।

दिनकर का काव्य-वैभव १९२८ से लेकर १९७४ तक रचित लगभग बतीस कृतियों में अपने प्रभापुंज को प्रकाशित करता है. इनमें 'रेणुका', 'हुंकार', 'सामधेनी', 'दिल्ली', 'उर्वसी', 'परशुराम' की प्रतीक्षा और हारे को हरिनाम कृतियां सर्वथा उल्लेखनीय हैं.

राष्ट्रकवि का काव्य भाव और भाषा के स्तरों पर युगानतकारी प्रतिभा से हमारा विश्वसनीय साक्षात्कार कराता है. दिनकर का प्रादुर्भाव छायावाद युग के संधयाकाल में हुआ. इन्होंने उद्दाम भावावेग और ओजस्वी भाषा-शैली द्वारा हिन्दी को ज्योतित किया. इनकी प्रारंभिक कृतियां छायावाद को स्पर्श करती हुई भी स्वच्छन्द भावधारा का अहसास कराती हैं. 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवन्ती' आदि शुरू की रचनाओं में कवि के अनुसार 'अतीत का रोना और नश्वरता का विलाप' है, किन्तु इन्हीं में छायावादी लीक से अलग हटकर व्यक्त होने वाले जीवन-जगत के उच्छवसित भाव-बोध भी है, जो दिनकर को भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश

त्रिपाठी, मुकुटधर पाण्डेय, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की पंक्ति में प्रतिष्ठित करते हैं. 'रेणुका' में संगृहीत कविता 'हिमालय के प्रति' कवि की सृजनात्मक का दस्तावेज है. इसमे कवि ने प्रतीकात्मकता के सहारे राष्ट्र की श्रेष्ठ सत्ताओं में भारत की सच्ची आत्मा को भावित किया है. इसकी ये पंक्तियां आज भी देशवासियों को ओज और पौरूष के भावों से भर देती हैं.

मेरे नग पति मेरे विशाल!
साकार दिव्य गौरव विराट्
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल
तू मौन त्याग कर सिंहनाद
रे तपी! आज तप का न काल,
नवयुग शंखध्वनि जगा रहा,
तू जाग, जाग, मेरे विशाल

'कुरूक्षेत्र' में दिनकर ने महाभारत को नहीं दुहराते हुए भी जीवन मूल्यों से सरोकार रखने वाले शाश्वत प्रश्नों को उठाया और युधिष्ठिर-भीष्म के संवादों द्वारा युद्ध-शांति की प्रासंगिकता में मानवीय श्रेय-प्रेय की बेबाक व्याख्या की है. ऐसे प्रसंग में वर्तमानकालीन ज्वलन्त सवालों को उठाने और उनका संगतपूर्ण हल खोजने की भी चेष्टाएं हुई हैं. ये पौराणिक आख्यानों के मार्मिक स्थलों की पहचान संबंधी कवि की सामर्थ्य को भी प्रमाणित करते हैं, यथाः

समर निन्द्य है धर्मराज, पर, कहो शांति वह क्या है,
जो अनीति पर स्थित होकर भी बनी हुई सरला है?
सुख-समृद्धि का विपुल कोष संचित कर कल, बल, छल से, किसी क्षुधित का ग्रास छीन, धन लूट किसी निर्बल से।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

२३ सितम्बर, १६०८ ई० को गंगा के उत्तरी-तट पर स्थित मिथिलांचल के प्रसिद्ध तीर्थ सिमरिया, बेगूसराय में जन्में डॉ०रामधारी सिंह दिनकर का तिरोभाव २४ अप्रैल १६७४ ई० श्री व्यंङ्कटेश्वर-दर्शन से लौटकर, मद्रास मे हृदयगति रूकने से हुआ. पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में प्रतिष्ठा सहित स्नातक किया. स्नातक के बाद प्राधानाध्यापक- बरबीघा एच.ई.स्कूल, सब रजिस्टार- बिहार सरकार, निदेशक-प्रचार विभाग और जनसम्पर्क विभाग-बिहार सरकार, हिन्दी विभागाध्यक्ष-लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर, सदस्य (निर्वाचित) राज्यसभा, उप-कुलपति-भागलपुर विश्वविद्यालय, हिन्दी सलाहकार-भारत सरकार.

आपको राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मभूषण' १६५६. 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार-१६५६, भागलपुर विश्वविद्यालय से डी.लीट की मानार्थ उपाधि-१६६२, गरूकुल महाविद्यालय द्वारा विद्यावाचस्पति की मानार्थ उपाधि-१६६५, भारतीय भाषाओं की सर्वोत्तम कृति के रूप में 'उर्वशी' को ज्ञानपीठ पुरस्कार-१६७३.

व्यक्तिधर्म एवं समाज-धर्म के बीच की रेखा खींचते हुए कवि विचारणीय तर्को द्वारा इन विषयों को प्रमाणित करने का प्रयत्न करता है. जैसे-

व्यक्ति का है धर्म तप, करूणा, क्षमा,/व्यक्ति की शोभा विनय भी, त्याग भी,/किंतु उठता प्रश्न जब समुदाय का/भूलना पड़ता हमें तप त्याग को।

'नीलकुसुम' और 'उर्वसी' दिनकर की विरल सामर्थ्य के काल-जयी साक्ष्य हैं. प्रथम मे दिनकर ने 'चांद' और कवि, 'व्यालविजय', 'कवि की मृत्यु', 'तुम क्यों लिखते हो', 'किसको नमन करू मैं', 'शबनम और जंजीर' आदि के अन्तर्गत अपनी संवेदना और संप्रेषण से हिन्दी काव्य के नए शिखरों को व्यक्त किया हैं. ये कविताएँ बोल-चाल की वाचिकता का उपयोग करती हुई, नए रागात्मक और बौद्धिक संबंधों की तलाश करती हैं. इनके संबंध में स्वयं कवि ने भी ठीक ही कहा है कि 'ये कविताएं अधिक ताजी और मेरी आत्मा के अधिक समीप है'. ऐसी कविताओं के ये कुछ अंश उल्लेखनीय हैः

रचना तो पूरी हुई, जान भी है इसमें,/पूछूं जो कोई बात, मूर्ति बतलायेगी?/लग जाय आग यदि किसी रोज देवालय में,/चौंकेगी यह खड़ी-खड़ी जल जायेगी।/और, बंधु मेरे सिन्धु, यों क्या चीखते हो?

तुम सुयश के भिक्षु मुझको दीखते हो?
मूक हो जाओ अगर बल चाहते हो।
रत नहीं, रवहीन की झंकार है वह,
मूकता के साथ एकाकार है वह
मूक है, प्रच्छन्न है सबसे बड़ी आवाज।

'उर्वसी' को दिनकर की रचना-यात्रा का उत्कर्ष माना जा सकता है, तो उनकी बहुचर्चित कृति 'परशुराम की प्रतिक्षा' कवि द्वारा अनुभूत समय की कुक्षि से जन्म लेने वाले संदेशों की अनुगूंज रूप में उपमित हो सकती है. 'उर्वसी' के नायक-नायिका कामाध्यात्म की अन्विति की अनुरूपता में पुरुष और नारी की सनातन परस्परता का प्रतिनिधान करते हैं. इसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी से प्रभावित काम संबंधी आधुनिक शंकाओं का यथोचित युक्तिकरण किया गया है.

भारतीय संस्कारः दृष्टि मनु की

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

जन्मः २८.१०.१९२६, **शिक्षाः** एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत एवं प्राकृत जैनशास्त्र) साहित्य रत्न, साहित्यालंकार **शोधकार्यः** 'वसुदेवहिण्डीः एक आलोचनात्मक अध्ययन' **प्रकाशित पुस्तकेंः** दो काव्य, एक आलोचना, एक संस्मरण, एक निबन्ध संग्रह, एक व्याख्यानों का संग्रह, आठ बाल कथाओं का संग्रह, **सम्पादनः** साहित्य त्रैमासिक, बिहार-हिन्दी साहित्य सम्मेलन, परिषद पत्रिका, धर्मायण, शिखा संकेत, ब्रह्मज्योति व चक्रबन्धु **सम्मानः** भारत के अनेक संस्थाओं से सम्मानित व पुरस्कृत **सम्पर्कः** बी-१५, एम.पो. फैक्ट्री कैम्पस, श्री नगर कॉलोनी, हरहर महादेव भवन के सामने, सन्दलपुर, पटना-८००००६, मो० ०९३३४४९३४६६

भारतीय समाजचिन्तक स्मृतिकार महाराज मनु ने संस्कार का केन्द्रीय अर्थ मन, वचन और शरीर की पवित्रता या शुद्धि से सन्दर्भित माना है. इसके लिए उनका यह वचन नीतिकारों के लिए भी ग्राह्य हुआ हैः

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतां वदेद्वाचं मनःपूतं समाचरेत्। (६.४६)

अर्थात्, दृष्टि से शोधित भूमि पर पैर रखकर चलना चाहिए, वस्त्र से छाना हुआ जल पीना चाहिए, सत्य से पवित्र वचन का व्यवहार करना चाहिए और मन से पवित्र आचरण करना चाहिए.

मनु ने गर्भाधान से अन्त्येष्टि तक यथाप्रथित सोलह संस्कारों की जगह बारह संस्कारों को ही परिभाषित किया है. सोलह में चार कर्णवेध, विद्यारम्भ, वेदारम्भ और अन्त्येष्टि का प्रकारान्तर से स्वतंत्र वर्णन किया है. ये सभी संस्कार मानव के मन, वचन और शरीर के पवित्रीकरण से जुड़े हुए हैं. मनु ने अपनी स्मृति का निर्माण मानव की बहिरन्तः शुद्धि के लिए ही किया है, इसीलिए मनुस्मृति की अपर संज्ञा 'मानव-धर्मशास्त्र' है.

मनु ने मन, वचन और शरीर-जनित कर्मो के शुभाशुभ फलों के अनुसार ही मनुष्य की उत्तम, मध्यम और अधम गति की प्राप्ति का निर्देश किया हैः

शुभाशुभफलं कर्म मनोवाग्देहसम्भवम्।
कर्मजा गतयो नृणामुत्तमाधममध्यमाः।। (१२.३)

इसलिए मनुष्य को मन, वचन और शरीर इन तीनों स्तरों पर संस्कार शुद्ध होना अनिवार्य है. इन तीनों स्तरों के कर्मो की व्याख्या मनु ने इस प्रकार की हैः

मानस कर्मः

परद्रव्येष्वभिधानं मनसानिष्टचिन्तनम्।
वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम्।। (१२.५)

अर्थात्, मन में पराये धन को हड़पने की और अनिष्ट करने की चिन्ता तथा मिथ्या अवधारणा के प्रति आसक्ति ये तीनों अशुभफलदायक मानस कर्म है.

वाचिक कर्मः

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतू-
-र्विधम्।। (१२.६)

अर्थात्, अप्रिय और असत्य बोलना, चुगली करना, और असम्बद्ध बकवास करना ये चार अशुभ वाचिक कर्म है.

शारीरिक कर्मः

अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः।
परदारोपसेवा च शारीरं त्रिविधं स्मृतम्।। (१२.७)

अर्थात्, अन्यायपूर्वक, बिना दिये दूसरे का धन ले लेना, शास्त्रनिषिद्ध हिंसा करना और परस्त्री का सेवन करना-ये तीन अशुभ शरीरजन्य कर्म है.

इस प्रकार, तीन प्रकार के मानस, चार प्रकार के वाचिक और तीन प्रकार के शारीरिक-इन कुल दस प्रकार के धर्म रहित कर्मो का त्याग कर देना चाहिए. (द्र० १२.८)

मनु ने धर्म को ब्रह्मज्ञान के अंगभूत संस्कार-रूप में स्वीकार करते हुए कहा है-राग-द्वेष से रहित तथा वैदिक संस्कार से युक्त, धार्मिक विद्वानों द्वारा अनुष्ठित एवं हृदय से स्वीकृत और फिर संशय-रहित धर्म ही सच्चा धर्म है.

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्य-मद्वेषरागिभिः।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तं निबोधत।। (२.१)

मनु ने वैदिक संस्कार पर बहुत बल दिया है. इसीलिए उन्होंने वेदों को धर्म

का मूल कहा है. जो वेद जानता है, वही स्मृति और शील की रक्षा कर सकता है. धार्मिकों का आचार तथा विकल्पात्मक स्थिति में आत्मतुष्टि ही प्रामाण्य है. महाकवि कालिदास ने लिखा हैः **'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरण प्रवृत्तयः'** (अभिज्ञानशाकुन्तलमः१.२१) सन्देहास्पाद स्थिति में सज्जनों के अन्तःकरण की प्रवृत्ति ही प्रमाण है, आत्मतुष्टि है. मनु ने इसी आत्मतुष्टि की ओर साग्रह संकेत किया है.

संस्कारवान् व्यक्ति ही शीलवान् होता है. 'मन्वर्थमुक्तावली' टीका के लेखक आचार्य कुल्लूकभट्ट ने हारीत के द्वारा निर्दिष्ट शील के तेरह परिचायक तत्वों की चर्चा की है- *'ब्रह्मण्यता, देवपितृभक्तिता, सौम्यता, अपरोपतापिता, अनसूयता, मृदुता, अपारुष्यं, मैत्रता, प्रियवादित्वं, कृतज्ञता, शरण्यता, कारुण्यं, प्रशान्तिश्चेति त्रयोदशविधं शीलम'* अर्थात्, वेदज्ञ ब्राह्मणों के प्रति समादर-भावना, देव और पितरों के प्रति भक्ति-भावना, दूसरों के गुणों की उत्कृष्टता के प्रति दोषारोपण न करने की भावना, व्यवहार में कोमलता, निष्ठुरता से रहित मनोभावना, सबके प्रति मैत्रीभाव, प्रियवादिता, कृतज्ञता, लोकरक्षा की भावना, दया का करुणा की भावना और शान्तचित्तता- ये तेरह शील के स्वरूप है.

मनु पवित्र वैदिक कर्मो द्वारा सम्पन्न शरीर-संस्कार को भी ततोऽधिक मूल्य देते हैं. इसलिए उन्होंने गर्भशुद्धि-कर्म, हवन-कर्म, जातकर्म (शिशुओं के मधु -घृत-प्राशन आदि), चूड़ाकरण-कर्म (मुण्डन), उपनयन-कर्म आदि को संस्कार-वृद्धि के लिए आवश्यक माना है और इन कर्मो के सम्पन्न करने का विस्तार से और विधिवत उल्लेख किया है.

मनु ने बारह संस्कारों का ही मीमांसापूर्वक इस प्रकार उल्लेख (द्र० मन्वर्थमुक्तावली-सहित अध्याय २) किया हैः

१. गर्भाधान(गर्भशुद्धि के लिए सम्पन्न होने वाला कर्म)
२. पुंसवन(गर्भाधान के चिह्न प्रकट होने पर पुत्रोत्पत्ति के उद्देश्य से किया जाने वाला कर्म)
३. सीमन्तोन्नयन (गर्भाधान के चौथे, छठे या आठवें महीने होने वाला गर्भिणी के बालों का विभाजन-रूप कर्म)
४. जातकर्म(जातक का सुवर्ण-घृत-प्राशन आदि कर्म)
५. नामकर्म (नामकरण का कर्म)
६. निष्क्रमण (शिशु को चौथे महीने सूर्य से दर्शन के निमित्त घर से बाहर निकालना)
७. अन्नप्राशन (जन्म के छठे महीने पहली बार बच्चे को अन्न खिलाने का कर्म)
८. चूडाकर्म (मुण्डन)
९. उपनयन (यज्ञोपवीत)
१०. केशान्त(यज्ञोपवीत के बाद सिर के केशों का मुण्डन-कर्म)
११. समावर्त्तन (वेदाध्ययन समाप्त करके ब्रह्मचारी का घर वापस आना)
१२. विवाह (स्त्री-पुरुष का परस्पर दाम्पत्य-सूत्र में आबद्ध होना)

मनु ने अन्नगत संस्कार के प्रति भी विशेष आग्रहशीलता व्यक्त की है. वह लिखते हैं-अन्न की सदा पूजा करनी चाहिए और अन्न का ग्रहण अनिन्दित भाव से करना चाहिए. भोजन के समय अन्न को देखकर हर्ष और प्रसन्नता व्यक्त करे और प्रणामपूर्वक उसे ग्रहण करें. (२.५४) पूजित अन्न बल (सामर्थ्य) और ऊर्जा (वीर्य) प्रदान करता है. वही अपूजित होने की स्थिति में बल और ऊर्जा दोनों का नाश कर देता है. (२.५५) अपना जूठा अन्न किसी को नहीं देना चाहिए. दिन और सन्ध्या के भोजन के बाद की अवधि में दुबारा भोजन नहीं करना चाहिए. दो बार नियमित भोजन में भी अधिक भोजन नहीं लेना चाहिए और जूठा हाथ-मुंह लिये कहीं नहीं जाना चाहिए. अति भोजन अस्वास्थ्यकर, आयुर्बल कम करने वाला, स्वर्ग की गति को रोकने वाला, पुण्यक्षयकारी और लोकनिन्दनीय होता है. (२. ५६-५७)

मनु ने स्त्रियों के लिए विवाह-विधि को ही उपनयन-स्थानीय वैदिक संस्कार कहा है और पति की सेवा ही उनके लिए गुरुकुल में रहने के समान है. और फिर गृहकार्य ही उनके लिए सायं-प्रातः अग्नि सेवा या हवन कार्य है तथा यही उनके लिए वैदिक कर्म भी है. मूल पाठ इस प्रकार हैः

वैवाहिको विधिः स्त्रीणां संस्कारों वैदिकः स्मृतः।/पतिसेवा गुरौ वासो गृहार्थो ऽग्निपरिक्रिया।।/अग्निहोत्रस्य शुश्रूषा सायमुद्वासमेव च।/कार्य पत्न्या प्रतिदिनं इति कर्म च वैदिकम्।। (२.६७ः७ क्षेपक)

युवा पीढ़ी में बड़ो-बूढ़ों के प्रति सम्मान का संस्कार जगाने के लिए मनु ने अपनी जागरूकता प्रदर्शित की है. उन्होंने लिखा हैः

अशिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।/ चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्।।

अर्थात्, 'वृद्धों के प्रति अभिवादनशील और उनकी सेवा में सदा तत्पर व्यक्ति आयु, विद्या, यश और बल से समृद्ध होता है.' आयु-वृद्धि की वैज्ञानिकता को स्पष्ट करते हुए मनु लिखते हैंः

ऊर्ध्व प्राणा ह्युत्क्रामन्ति यूनः स्थविर

आयति।/प्रत्युत्यानाभिवादाभ्यां पुनस्तान्प्रतिपद्यते।। (२.१२०)

युवा के सामने जब बूढ़ा आता है, तब युवा की हृदयस्थित प्राणवायु देह से बाहर निकल जाना चाहता है. ऐसी स्थिति में जब युवा खड़े होकर बूढ़े का अभिवादन करता है, तब वह प्राणवायु अपनी जगह पर आकर स्थिर हो जाती है. खड़े होकर प्रणाम नहीं करने वाले युवा की प्राणवायु की विपर्यस्तता के कारण आयु क्षीण हो जाती है, इसलिए बूढ़े लोगों का खड़े होकर अभिवादन करना आवश्यक है.

मनु ने भारतीय संस्कार के प्रमुख पक्ष अभिवादन और प्रत्यभिवादन पर विशद रूप से लिखा है. उन्होंने यह भी लिखा है कि जो अभिवादन का प्रत्यभिवादन करना नहीं जानता, उसे कभी नहीं अभिवादन करना चाहिए; क्योंकि वह विद्वान होकर भी संस्कार से भ्रष्ट और शुचिता से च्युत है.

यो न वेत्त्यभिवादस्य विप्रः प्रत्य-भिवादनम्।/नाभिवाद्यः स विदुषा यथा शूद्रत्सथैव सः।। (२.१२६)

रास्ता चलने के क्रम में भी पूज्यता का भाव रखना चाहिए और अपने सामने आये हुओं को रास्ता देना चाहिए. रास्ता किस-किस को देना चाहिए, इसके सम्बन्ध में मनु लिखते हैः

चक्रिणो दशमीस्थस्य रोगिणो भारिणः स्त्रियः।
स्नातकस्य च राज्ञश्च पन्था देयो वरस्य च।। (२.१३८)

अर्थात्, गाड़ीवान, अपने जीवन के दसवें दशक में पहुंचे हुए, यानी नब्बे वर्ष से ऊपर वाले वृद्ध व्यक्ति, रोगी, बोझ से दबा हुआ, स्त्री, दीक्षान्त-समारोह से लौटे स्नातक, राजा और वर को ससम्मान रास्ता देना चाहिए. इन सबकी सम्मिलित उपस्थिति में राजा और स्नातक को पहले मान्यता दी गई है और फिर राजा और स्नातक को प्राथमिकता मिली है.

पारिवारिक स्तर पर पूज्यता सर्वोपरि माता को दी गई है. मनु कहते हैः

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।/सहस्त्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते।। (२.१४५)

अर्थात्, उपाध्याय से आचार्य का दसगुना, आचार्य से पिता का सौगुना और पिता से माता का स्थान हजार गुना ऊँचा है.

सच पूछिए तो, 'मनुस्मृति' मनुष्य को मानवतावादी संस्कारों से सम्पन्न करने वाला ऐसा भारतीय ग्रन्थ है, जिसकी प्रासंगिकता आज भी अक्षुण्ण है. मनुस्मृति में स्वस्थ और संस्कार-सम्पन्न समाज के निर्माण और उसके सम्यक् संचालन आदि के नियमों के साथ ही मानव-जीवन-सम्बन्धी अनेक दुनियादारी नियम-उपनियम और व्यवहार-बरताव बताये गये हैं. इनका पालन सभी नर-नारी से यदि सम्भव हो जाय तो फिर भू-भार न मालूम पड़े. मनुस्मृति शरीर को स्वस्थ, चरित्र को संस्कारनिष्ठ और आत्मा को निर्मल और पवित्र तथा नीति को नियमनिष्ठ बनाने का मार्ग तो दिखलाती ही है, मनुष्य को मानवता का अमर सन्देश भी देती है. पवित्र आचार या आचरण ही संस्कार का पर्याय है. इसलिए मनु की दृष्टि में धर्मनिष्ठ आचार या सदाचार ही भारतीय संस्कार का सच्चा स्वरूप है और इसे ही ध्यान में रखकर मनु ने **'आचारः परमोः धर्मः', 'आचारश्चैव शाश्वतः', 'सर्वस्य तपसो मूलमाचारं'** जैसे मन्त्रवाक्यों का आग्रहपूर्वक उल्लेख किया है.

पत्रकारों की सुरक्षा, संरक्षा एवं अधिकारों के लिए गठित

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया

- पत्रकारों के लिए निःशुल्क चिकित्सा, आवास, समाचार संकलन हेतु निःशुल्क ट्रेन/बस यात्रा पास, वृद्ध पत्रकारों को मासिक आर्थिक मदद दिलवाने हेतु संघर्ष करना और सहयोग के लिए सरकार को प्रेरित करना.
- पत्रकारों का वार्षिक दुर्घटना व स्वास्थ्य बीमा करवाना.
- देश भर के त्रैमासिक, मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक, दैनिक समाचार पत्रों/पत्रिकाओं के संपादकों/पत्रकारों को समय-समय पर निःशुल्क शिविर, गोष्ठी, सम्मेलन, अधिवेशन करके सहयोग एवं मार्गदर्शन करना।
- पत्रकारिता के उत्थान के समर्पित पत्रकारों/संपादकों को समय-समय पर सम्मानित करना। पत्रकारों, संपादकों के हितों के लिए संघर्ष करना, कानूनी लड़ाई लड़ना और आपदा/दुर्घटना के समय सहयोग करना।

विस्तृत जानकारी व सदस्यता ग्रहण करने के लिए सम्पर्क करेंः

10 रीवां बिल्डिग, लीडर रोड, (रेलवे जंक्शन के सामने) इलाहाबाद–211003, उ.प्र. ☎(का0)0532-2401671, 09935959412, 9335155949 **Email:** media_fi@rediffmail.com

तुलसी काव्य में सूक्तियाँ

डॉ० शिववंश पाण्डेय

जन्मः ११.०२.१९३२, **सेवाः** व्याख्याता (हिन्दी) उपनिदेशक-राजभाषा, बिहार सरकार, उपाध्यक्ष/सह निदेशक-बिहार राष्ट्रभाषा परिषद **प्रकाशित कृतियाः** साहित्य मंथन, राष्ट्रीय एकता का सूत्रः हिन्दी, बिहार गौरव, कांटों पर मुस्कुराता गुलाब, अग्निपंथीः अनुशीलन, लौकिक न्याय कोश, हिन्दी साहित्यः विविध आयाम, साहित्य और साहित्यकार सहित लगभग १८ पुस्तकें **सम्पादनः** सात पत्रिकाओं का **सम्मानः** एक दर्जन से अधिक संस्थाओं से सम्मानित एवं पुरस्कृत

सम्पर्कः लीलाधाम, मकान नं० ३०७, पथ संख्या ३जी, न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी, पटना-८०००१३, मो० ०९४३०२५३६६६

सूक्ति का सामान्य अर्थ है-सु+ उक्ति अर्थात् सुन्दर या सौष्ठवपूर्ण कथन. सामान्य लोकवाणी में विचित्र कथन को ही सूक्ति कहा गया. जो बाद में चलकर कविवाणी के पर्याय के रूप में व्यवहृत होने लगा.

आचार्य कुन्तक ने कहा है कि कवीन्द्रों का मुख्य नृत्य का रंग मंदिर है, सरस्वती उस रंगमंदिर में अपने आनंदपूर्ण विलासों का अभिनय कर रही हैं, वे विलास ही सूक्तियां है-

वन्दे कवीन्द्र वक्त्रेन्दु लास्य मंदिर नर्तकीम्।/देवी सूक्ति परिस्पन्द सुन्दराभिनयोजज्वलाम्।।

इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखें तो पायेंगे कि लोकोक्ति का विकास ही प्रकारान्तर से सूक्ति या सुभाषित बन जाता है. लोक की उक्ति लोकोक्ति है, वही जब कवि विशेष से उद्गृहीत हुई तो सूक्ति हो गई, सुभाषित हो गई. स्थूल दृष्टि से देखा जाए तो ऐसा मालूम पड़ेगा कि सूक्ति सुभाषित और लोकोक्ति समानार्थक है. सूक्ति चित्कण के समान है. सूक्तियों में सचेतन अनुभव, गहन चिन्तन और उन्मुक्त कल्पनाएं चमत्कृतिजनक शब्दों में उतरती रहती है. यही कारण है कि सूक्तियां संगी-साथी के रूप में कंटकाकीर्ण जीवन-पथ पर यात्री का न केवल साथ देती है अपितु प्रकाश और बल भी देती हैं. समासतः यही कहा जा सकता है कि सूक्तियां लोकजीवन की समृद्धि और लोकायात्रानिर्वाह के साधन और संबल है. ये लोकमान्यताओं से भक्ति, नैतिक आचारों से सिंचित ज्ञान तरु है जिनके फलों से नीति संभूत लोकानुभव के रसस्राव होते रहते हैं. इसलिए सामान्य जनों के अधर पर सूक्तियां सहज लोकवार्ता और लोकविधा के रूपमें शास्त्र-पुराणों से लेकर आधुनिक साहित्य तक में प्रसारित एवं प्रयुक्त हैं. संस्कृत वाङ्मय में तो अनमोल सूक्तियों की प्रचुर सम्पदा है जिसमें बड़े संक्षेप में मानव जीवन से सम्बद्ध ध्रुव सत्य को अति प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त किया गया है और प्रतिपादित तथ्यों की सत्यता को चुन-चुनकर दी हुई उपमा और निदर्शन द्वारा प्रसाधित किया गया है. 'महाभारत' और 'रामायण' तो सूक्तियों का सागर ही हैं. हिंदी साहित्य भी ऐसी सूक्तियों से भरा पड़ा है. कबीर, सूर, तुलसी, रहीम, बिहारी, बृन्द, गिरिधर आदि की सूक्तियां हिंदी साहित्य के गले का कंठहार बनी हुई है. कवि कुलगुरू गोस्वामी तुलसीदास ने तो 'नाना पुराणनिगमागम' का अध यथन मनन किया था और लोकजीवन का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया था, इसलिए उनकी रचनाओं में सूक्तियों का प्रयोग स्वाभाविक है. गोस्वामी जी ने न केवल प्रचलित सूक्तियों का प्रयोग किया है वरन् वे अनेक ऐसी सूक्तियों के जन्मदाता भी रहे हैं जो पथ्योक्ति की भांति आमजनों की जिह्वा पर आज भी थिरक रहे हैं और कवियों की वाणी में अमरवाणी की तरह समादृत और संप्रयुक्त हैं.

गोस्वामी जी के रामचरित मानस की सभी सूक्तियों का एक आलेख में समाहरण, समीक्षण और समुपस्थापन असंभव है, इसलिए स्थलीपुलाकन्यायवत् कुछ ही सूक्तियों का संग्रह-विवेचन को लिया गया है. शास्त्रीय एवं लौकिक ज्ञान-व्यवहार के तीक्ष्णप्रज्ञ अवेक्षक गोस्वामी तुलसीदास की प्रायः अधिकांश अनुभवोक्तियां सूक्तिभावित है.इनके द्वारा व्यक्ति एवं समाज को उपदेष्टा की भांति प्रबोधित करते हुए व्यवहारिकता एवं कर्तव्याकर्त्तव्य-निर्धारण का पाठ पढ़ाया गया है. इनमें व्यक्तिगत समस्याओं का निदाान है, सामाजिक समस्याओं का समाधान है, न्यायिक निष्कर्षो का प्रावधान है, व्यावसायिक व्यवहारों का प्रतिमान है और करणीय-अकरणीय का विधान है. इनमें सिद्धोक्ति की यथार्थता,

लोकोक्ति की व्यापकता और उपदेशन की सहज ग्राह्यता का अद्भुत समन्वय है. खंडन-मंड की लोकोत्तर प्रतिभा से सम्पन्न गोस्वामी जी की सूक्तियां कालाबाधित निर्देश-सूत्र के रूप में लोकमानस में प्रचलित एवं समादृत हैं.

मानस की सूक्तियों का विस्तार-क्षेत्र विस्तृत और प्रभाव क्षेत्र व्यापक है, अतः इनको किसी प्रकार के वर्गीकरण की परिधि में निबद्ध नहीं किया जा सकता. काण्डवार पांच-पांच सूक्तियों के प्रस्तुतीकरण द्वारा ही इनकी संभूतियों का संदर्शन किया जा सकता है. इस प्रयोजनार्थ सर्वाधिक प्रचलित सूक्तियां ही प्रस्तुत की जा रही है.

बालकाण्डः

नहि कौउ अस जनमा जग माहीं।
प्रभुता पाई जाहि मद नाहीं।।
(१/६० पृ. ७०)

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावे साखा।।
(१/५२ पृ० ६६)

समरथु कहुँ नहिं दोषु गोसाई।
रवि पावक सुरसरि की नाई।।
(१/६६ पृ० ७५)

मनु हठ परा न सुनई सिखावा।
चहत बारि पर भीत उठावा।।
(१/७८ पृ. ७६)

अयोध्याकाण्डः

ऊँच निवासु नीचि करतूती।
देखि न सकहिं पराई विभूति।।
(२/१२ पृ०४१)

कोउ नृप होउ हमहि का हानी।
चेरि छाड़ि अब होब कि रानी।।
(२/१६ पृ० २४३)

काने खोरे कूबरे कुटिल कुचाली जानि।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरत मातु मुसुकानि।। (२/१४ पृ० २४२)

का पूँछहु तुम्ह अबहुँ न जाना।
निज हित अनहित पसु पहिचाना।।
(२/१६ पृ. २४५)

ऐसिउ पीर बिहसि तेहिं गोई।
चोर नारि जिमि प्रगट न रोई।।
(२/२६, पृ. २४६)

अरण्यकाण्डः

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपद काल परिखि अहिं चारी।।
(३/५ पृ. ४०७)

रन चढ़ि करिअ कपट चतुराई।
रिपु कर कृपा करम कदराई।।
(३/१६, पृ. ४२२)

विद्या बिनु विवेक उपजाँए श्रम फल पढ़े किएँ अरु पाएँ।। (३/२१ पृ. ४२२)

भयदायक खल के प्रियबानी।
जिमि अकाल के कुसुमभवानी।।
(३/२४, पृ.४२७)

किष्किंधा काण्डः

जे न मित्र दुख होहि दुखारी।
तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।।
(४/७ गु.पृ.४४५)

सेवक सठ नृप कुपन कुनारी।
कपटि मित्र सूल सम चारी।।
(४/७ पृ.४४५)

अनुज बधू भगिनह सुत नारी।
सुन सठ कन्या सम ए चारी।।
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकई जोई।
ताहि बधे कछु पाप न होई।।
सुर नर मुनि सब कै यह रीती।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।।
(४/१२ पृ.४४६)

सुन्दर काण्डः

सात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।।
(५/४, पृ. ४६५)

सुनहु पवन सुत रहनि हमारी।
जिमि दसनन्हि महुँ जीभ विचारी।।
(५/७, पृ. ४६६)

समय सुभाउ नारि कर साचा।
मंगलि महुँ भय मन अति काचा।।
(५/३७, पृ.४८२)

गुन सागर नागर नर जोउँ।
अलप लोभ भल कहइ न कोउ।।
(५/३८, पृ. ४८३)

लंका काण्डः

नाथ बयरु कीजे ताही सों।
बुद्धि बल सकिअ नीति जाहीं सों।।
(६/६, पृ.५०१)

बचन परम हित सुनत कठोरे।
सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे।।
(६/८, पृ.५०३)

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं।
अवगुन आठ सदा उर रहीं।।
(६/१६, पृ.५०७)

फूलइ फरइ न बेत जदपि सुधा बरषहिं जलद।/मुरूख हृदयँ न चेत जौं गुर मिलहिं बिरेचि सम।।(६/१६, पृ. ५०७)

उत्तरकाण्डः

संत संग अपवर्ग कर कामी भवकर पंथ।/कहहिं संत कवि कोविद श्रुति पुरान सद्ग्रंथ।। (७/३७ पृ. ६०७)

स्वारथ मीत सकल जगमाहीं।
सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं।।
(७/४७ पृ.६१४)

छूटइ मल कि मलहिं के धोये।
घृत कि पान काइ नाहि बिलोए।
(७/४६ पृ.६१५)

कवितावली-विनयपत्रिका-दोहावलीः

पालिकै कृपाल! व्याल-बालक को न मारिए,/औ काहिए न नाथ। बिषहू को सख लाइ कै। (गीताप्रेस-कवितावली पृ.१३०)

जो धन बरषें समय सिर जौं भरि जनम उदास।/ तुलसी या चित चातकहि तऊ तिहारी आस।। (गीताप्रेस-कवितावली, २२वां संस्करण, पृ.६५)

सब साधन फल कूपसरित सर, सागर-सलिल-निरासा।/ राम नाम रति

स्वाति सुधा सभ सीकर प्रेम पियासा।। (गीताप्रेस-कवितावली, २६वां सं.पृ.१२०)

तुलसी भेड़ी की धँसनि जड़ जनता सनमान।/उपजत ही अभिमान भो खोवत मूढ़ अपन।।

(गीताप्रेस-दोहावली, पृ.१६५)

जाके प्रिय न राम बैदेही।/ तजिए ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही।। (गीताप्रेस-विनय पत्रिका, २६वां.सं., पृ.२८१)

जो मारग श्रुति साधु दिखावै। तेहि पंथ चलत सबै सूख पावै।। (गीताप्रेस-विनय पत्रिका, १३६/१२, पृ.२२०)

लही आँख कब आंधरे बाँझ पूत कब ल्याइ।/कब कोढ़ी काया लही जग बहराइच जाइ।। (गीताप्रेस-दोहावली, २२वां सं., पृ.१६६)

करि हंस को बेषु बड़ो सबसों,
तजि दे बकवायस की करनी।

(गीताप्रेस-कवितावली पृ.८५)

लोकरीति बिदित बिलोकिअत जहां-तहां स्वामी के सनेहं स्वानहू को सनमानु है।

(वही, पृ.६७)

ठीक प्रतीति कहै तुलसी,
जग होइ भले की भलाई भलाई।।

(वही, पृ.१२६)

गोस्वामी जी द्वारा व्यहृत, प्रमथित एवं सृष्ट सूक्तियों के अवलोकन मनन से स्पष्ट है कि इनमें कालाबाधित अनुभवों का विस्तार है, इन पर समयोचित क्षरण का प्रभाव नहीं, इसलिए समय के अग्रदूत रूप में आगामी चरणों को स्वस्थ एवं सबल गति प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं और उक्ति वैचित्र्य के चमत्कार से साहित्य गगन को आलोकित करते हैं।

जीवन तो-

संघर्ष है लगे रहो
चुनौती है सामना करो

लक्ष्मीराज दीवान

पत्रिका के 12वर्ष पूरे करने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये .... नकद/ धनादेश/चेक/बैंक ड्राफ्ट/पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा/रही हूं कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक.................................दिनांक...........
बैंक का नाम..
2. धनादेश क्रमांक....................................दिनांक...........

हस्ताक्षर

नाम :...
पता :..
....
....पिन कोड..........
दूरभाष/मो0.........................ईमेलः..............................

विशेष नियमः

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.

02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.

03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.

04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.

05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10/–	$ 1.00/
वार्षिक	रु0 110/–	$ 5.00/
पाँच वर्ष :	रु0 500/–	$ 150/
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–	$ 350/
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–	$ 1500/

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011, उ.प्र. ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सूरदास की यशोदा

डॉ० रेखा मिश्र

जन्मः १०.१२.१९६३, **सेवाः** अध्यापन **शिक्षाः** एम.ए., एम.फिल., पी.एच.डी, **उपलब्धियांः** स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं का संपादन व रचनाएं प्रकाशित. आकाशवाणी से वार्ताओं व कविताओं का प्रसारण

सम्पर्कः ४०डी, आनन्दपुरी पथ, संख्या ३, पश्चिमी बोरिंग कैनाल रोड, पटना-८०००01, बिहार

मो० ०९४७३४५९३८६

'सूरसागर' की तुलना 'महाभारत' से की जा सकती है. महाभारत कहानियों, घटनाओं, व्याख्यानों और उपदेशों का विशाल समुद्र है. 'सूरसागर' में गोपियों का इतना विस्तृत वर्णन है कि उसे स्त्री-चरित्र का काव्य कहें तो अनुचित न होगा. उसमें मातृरूप का अभूतपूर्व चित्र उतरा है. प्रेमिका का, कामिनी का, पत्नी का, लड़की का, रानी का, ग्वालिन का और परस्त्री का इतना सुन्दर रूप शायद ही किसी एक काव्य में स्पष्ट हुआ हो. कहा जाता है कि सूरदास बाल-लीला, वर्णन करने में अद्वितीय है लेकिन उन्होंने मातृ हृदय का जो चित्र उकेरा है वह भी अपने आप मे अद्वितीय है.

कहा जा सकता है कि 'सूरसागर' के दो चित्र संसार के साहित्य में बेजोड़ हैं-यशोदा और राधिका. यशोदा के वात्सल्य में वह सबकुछ है जो 'माता' शब्द को इतना महिमाशाली बनाये हैं. राधिका के चित्र में 'प्रेम' का अथ से इति तक सर्वस्व निहित है. यशोदा के बहाने सूरदास ने मातृ-हृदय का ऐसा स्वाभाविक, सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है कि आश्चर्य होता है. सूरदास ने एक ओर पुत्रवती-जननी के प्रेम हृदय को छूने का प्रयास किया है वहीं दूसरी ओर वियोगिनी माता के करुण-विगलित हृदय को भी उसी सर्तकता से स्पर्श किया है. पुत्र-वियोगिनी यशोदा वह माता है जो प्रेम की असीम उपलब्धि से परिपूर्ण है, वह प्रेम वियोग के रूप में परिवर्तित होकर कभी पूर्णता के किसी अंश को क्षुण्ण नहीं कर सका है. **मेरे कुंवर कान्ह बिनु सब कछु वैसेहि धर्‌यो रहै।/को उठि प्रात होत लै माखन को कर नेति गहै।।/सूने भवन जसोदा सुत के गुन गुनि सूल सहै।/दिन उठि घर घेरत ही ग्वारिन उरहन कोउ न कहै।/जो ब्रज में आनाद हुतो, मुनि मनसा हू न गहै।/सूरदास स्वामी बिनु गोकुल कौड़ी हू न लहै।**

यशोदा का चित्रण करते समय सूरदास ने सहज परिपूर्णता को कभी क्षुण्ण नहीं होने दिया है. यशोदा श्रीकृष्ण की उपस्थिति में परिपूर्ण प्रेममयी है. वे उन माताओं में नहीं है जो संतान की मंगल-आशा से सदा अश्रुपूर्ण आंखों से आकाश की ओर ताका करती है. हे देव-गण, जिसे पाया है उसे कहीं खो न दूं। यह प्रेम पूर्ण चित्र ठीक राधिका के समान ही उतरा है. सूरदास की राधिका, चण्डीदास की राधिका की भांति, मिलन में वियोग की कल्पना से कहीं भी सिहर नहीं उठती. यशोदा भी ठीक उसी तरह स्नेह-पात्र की उपस्थिति में उसकी वृथा अमंगल आशंका से उद्विग्न नहीं हो उठती. सूरदास की राधिका और यशोदा दोनों ही मिलन के साथ सोलह आना प्रेयसी और सोलह आना माता है. वियोग के समय दोनों ही सोलह आना वियोगिनी. यशोदा पुत्र की उपस्थिति में कहती हैः

लाला हौ बारी तेरे मुख पर।/ कुटिल अलक मोहन मन विंहसनि मृकुटी विकट ललित नैनति पर।

वही यशोदा नंदलाल की अनुपस्थिति में अत्यंत व्याकुल होकर कहती हैः

यद्यपि मन समुझावत लोग।/सूल होत नवनीत देखि मेरे मोहन के मुख जोग।

++++++++++++++++++++

सूर स्याम कत होत दुखारी जिनके मों सी मैया।।

इन दो पदों में आनन्दमयी और वियोगिनी यशोदा के दो चित्र एक ही प्रेम के दो परिणाम है. इस प्रकार माता के कोमल हृदय में पैठने की अद्‌भुत शक्ति है सूरदास में. मातृ-हृदय के चित्रण में सूरदास को जो सफलता मिली है वह उनकी प्रेम की कल्पना की है जो मिलन में सोलह आना मिलन और वियोग में सोलह आना वियोग के रूप में देखा जाता है. यह एक ही प्रेम यशोदा में एक रूप धारण कर गया है, राधिका में दूसरा, ग्वालबालों में तीसरा, रूक्मिणी में चौथा और गोपियों में अन्य रूप. यह प्रेम ही प्रकृति से मृदु है, पर है सारवान्, यह कांचन पद्यधर्मी है. कालिदास के शब्दों में-ध्रुवं वपुः कांचनपद्यधर्मि यत् मृदु प्रकृत्या च ससारमेव च.

लघुकथा

तमसो मा...

✍डॉ० उपेन्द्र प्रसार राय

जन्मः 02.01.1941, **शिक्षाः** एम.ए. (हिन्दी व अंग्रेजी), एम.एड., पीएच.डी, डी.लिट् **प्रकाशित कृतियाः** मैं भी जहर पीऊंगा, कापती परछाइयां, दर्पण झूठ नहीं बोलता कविता संग्रह सहित दो ग़ज़ल संग्रह, तीन लघुकथा संग्रह, एक व्यंग्य संग्रह, **संप्रतिः** सेवानिवृत्त प्राचार्य **सम्पर्कः** प्रतिभा निवास, पुराना ई.एम. को कैंपस, संदलपुर, पो. महेंदू, पटना-800006, मो० 09308150208

मैंने निर्णय ले लिया.

सारे दोष तो मेरे ही मथ्थे आएंगे न. कार्य के प्रति उनकी घोर उपेक्षा को संबंधित अधिकारी वर्ग मेरी ही अयोग्यता और अक्षमता समझेंगे न. मैंने प्रोफेसर सीताराम को उसी समय अपने कक्ष में बुलवा लिया.

"चाय पीएंगे?" मैंने पूरी सहृदयता से पूछा.

"अभिए तो पी रहे थे कैंटीन में कि तब तक चपरासी आ गया."

मैंने अपनी घड़ी पर नजर टिकाते हुए कहा-"लेकिन अभी तो आपका पीरियड था एम.ए. प्रथम वर्ष में. आध घंटा गुजर चुका है."

"अब ऐसा तो मत कीजिए न कि कोय चाहयो पीने न जाय." उसने सहजताा से उत्तर दिया.

सुनते ही मैं बौखला उठा. तब भी अपने पर नियंत्रण रखते हुए बोला, "देखिए चौधरी साहब, बुरा मत मानिएगा. मैं आप लोगों का विभागाध्यक्ष हूं. इसलिए विभाग में क्या चल रहा है, इस बात का पता तो होना ही चाहिए न मुझे! है कि नहीं?"

"हां, है."

"आप भी कल विभागाध्यक्ष बनेंगे तो ऐसा ही चाहेंगे न?"

"आज या कल तो बनना ही है. ...ऐसन तो चाहवे करेंगें."

मैं जल-भुन गया. इस निर्लज्ज को कोई भी बात शालीनता से समझाई जा सकती है क्या? मैंने तब भी धैर्य नहीं खोया. यों सीधे-सीधे मुद्दे पर उतर आया, "दस जुलाई से पढ़ाई आरंभ हो चुकी है. आज अगस्त की पच्चीस तारीख है. आपने इतने दिनों में कितने पीरियड लिए हैं अब तक?"

"पीरियड तो लेबे करते हैं." वह बिना किसी घबराहट के बोला.

"नहीं चौधरी साहब, आपने एक भी पीरियड नहीं लिया है अब तक. यह शिकायत लेकर विद्यार्थी रोज आते हैं मेरे पास. अब आप ही बताइए, मैं क्या करूँ?"

वह हंसा, "कूच्छो नय, इस कान से सुनिए और उस कान से निकाल दीजिए."

"और आप क्लास नहीं लेंगे?"

"कह तो दिया, नहीं लेंगे. जो सब पढ़ाने के लिए है, ऊ सब हमको नय आता है. का करेंगे क्लास जाकर?"

"तो प्रमोशन ही क्यों लिया?" मैं गुस्से को यथासंभव नियंत्रण में रखते हुए बोला.

"ई देखिए! अब आप हमारे प्रमोशन पर उतर आए? अरे, ऊ तो हमरा हक था सो लिया. आप मना कर देते तो नय लेते." वह व्यंग्य से हंसा.

"मैं आपकी शिकायत करूंगा."

"शौक से करिए. तब भी मेरा एक्को ठो उखाड़ नय सकिएगा. आप बुजुर्ग हैं इसीलिए सम्मान से बोल रहे हे. नहीं तो आप जैसे दस-बीस जन हमेशा हमरे पाकेट में रहते हैं." बोलते-बोलते वह उठ खड़ा हुआ.

सोच नहीं पा रहा हूं कि क्या करूं? इस माहौल में कर भी क्या सकताा हूं? शिक्षा के बाड़े में घुस आए इस राजनीतिक जानवर को अपने कक्ष से निकलते देखता रह जाता हूं. ..चुपचाप....अवश....लाचार.

समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पाँच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएँगें. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय के पते पर 30 सितम्बर 2013 तक.

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,

इलाहाबाद-211011, उ.प्र.

स्व.रामदयाल पाण्डेय

जन्मः 6.08.1915 **लोकान्तरणः** 15.03.2002 **व्यवसायः** पत्रकारिता, प्रधान संपादक-दैनिक नवराष्ट्र, दैनिक विश्वमित्र, साप्ताहिक-अग्रदूत, स्वदेश, नवीन बिहार, बिहार जीवन मासिक **शिक्षाः** साहित्यवाचस्पति, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग **कृतियाः** गणदेवता, अशोक, शक्तिमयी, राष्ट्रव्यंजना, युगान्तर, लोकायन, युवाज्योति, नवोदय, मन्वन्तर, अग्निपंथी, अमृत, आत्मकथा

कवि-पीड़ा

मत पूछिये कि सुबह क्यों
बेसोया-सा दिखता हूं
रात-रात भर तारे गिनता
तो मैं दिन में लिखता हूं।
जीने-मरने की चिन्ता क्या?
चिन्हा है जन-जीवन की
पीड़ा मैं ही तो सहता हूं
जन-गण के उत्पीड़न की।
भारत के जन-गण को क्या
कोई भी सुख है मिल पाता?
दैन्य-व्यथाएं देख सोच
कवि का अन्तस्तल फट जाता।
कोमल हृदय कुसम से बढ़कर
होता वह पाषाण कहां?
रहती दृष्टि उच्चता पर
पाते न पहुंच रवि-चन्द्र जहां।
कवि का जीवन लग जाता है
काव्य-पंक्तियां पाने में
शशि को लगता एक मास ही
पूर्ण रूप निज लाने में।
हो जाता है निधन, किन्तु
फिर भी पाता संतोष नहीं;
विष पीता रहता जीवन भर
पर देता है दोष नहीं।
कहां देख पाता सन्तति का
पोषण अथवा शिक्षण भी?
नहीं देखता हंसना, क्या
सुनता पुकार या क्रन्दन भी?
सुनता क्या श्रद्धांजलि मिलती
जो वसुधा से जाने पर?
कहते कवि मरता जीवन भर;
मरकर होता अजर-अमर।
अपनी पीड़ा भूल, विश्व
पीड़ा से सदा दुखी रहता।
कवि जो लिखता, जग उसको ही
उसका कुल-वैभव कहता।
लेखन ही जीवन हो कवि का;
चिर लेखन में प्राण रहें;
तन-धन से निरपेक्ष रहें;
पागल या जो भी सृष्टि कहे।

पं. हंस कुमार तिवारी

जन्मः 15.08.1918 **कार्यक्षेत्रः** संपादन -हिन्दी साप्ताहिक 'छाया', बिजली, किशोर, विश्वमित्र, उषा.1951—राजभाषा के विशेष पदाधिकारी सचिवालय बिहार सरकार, 1955 निदेशक बिहार राष्ट्रभाषा परिषद. 5 पुस्तकों का बंगला से हिन्दी अनुवाद, विभिन्न प्रांतो से सम्मानित **कृतियाः** आग पिये मोम की मूरत, रिमझिम, अनागत, नवीना, मकड़ी मर गई, साहित्यिका, साहित्यांचल, संचयन निबंध एवं आलोचना, बदला, सामाना नूर, पुनरावृत्ति, आधी रात का सवेरा **निधनः** 26.09.1980

माँ शारदे

माँ शारदे,
दुख की अड़ी काली निशा,
तम में गड़ी चारों दिशा,
बाती बुझी, अन्धी शिखा,
फिर स्नेह से उजियार दे।
ये तारे हैं हारे हुए,
स्वर मौन, मन मारे हुए,
इस बीन में संगीत का,
फिर से सहज झंकार दे।
जो था जुड़ा, बिछुड़ा हुआ,
श्रीहीन सब उजड़ा हुआ,
देवी, दया की कोर से,
उसको नया श्रृंगार दे।
सब एक हों, सब नेक हो,
शुचि प्रेम का अभिषेक हो,
जो नेम का, जो क्षेम का,
वह प्यार का संसार दे।

जीवन तो-

पहेली है	बुझते रहो
गीत है	गाते रहो
यात्रा है	चलते रहो
नाटक है	अनुभव करो
प्रेम है	अंगीकार करो
प्रतीज्ञा है	पूर्ण करो
पुस्तक है	अध्ययन करो
सुन्दरता है	सवारते रहो
लक्ष्य है	प्राप्त करो
खेल है	खेलते रहो
आशीर्वाद है	ग्रहण करो
सुअवसर है	उपयोग करो
कर्त्तव्य है	निभाते चलो
निराशा है	अडिग रहो
दुर्भाग्य है	निर्भय रहो
क्षण भंगुर है	निर्लिप्त रहो

लक्ष्मीराज दीवान

सबसे खूबसूरत जोड़ी

पूरी दुनिया की सबसे खूबसूरत जोड़ी कौन सी?
'मुस्कुराहट और आँसू'
दोनों का एक साथ मिलना मुश्किल है, लेकिन जब ये दोनों मिलते हैं, वो पल सबसे खुबसूरत होता है

मो० 08957124490

धन्य जीवन

डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर'

जन्मः 3 जनवरी 1938
मानद उपाधि/सम्मानः विद्या वाचस्पति, विद्यासागर, महावीर प्रसाद द्विवेदी कुल कलाधर, सम्पादक रत्न, अंगिका मनीषी, साहित्य श्री, भारत भाषा भूषण, मनीषा रत्न, हिन्दी गरिमा सम्मान, सम्पादक शिरोमणि सहित दर्जनों सम्मान.
पुस्तकेंः किसान के जगाबऽ(अंगिका एकांकी), एक शाखः दो फूल (हिन्दी नाटक), सर्वोदय समाज (अंगिका नाटक), फूल फुलैलै (अंगिका कहानी संग्रह-सम्पादित), अंगजतर (अंगिका कविता संग्रह-सम्पादित),विशाखा (अंगिका लघु उपन्यास), अंगिका जतसार (संपादित), भोरकऽ लाली (अंगिका काव्य), श्री राम जन्मोत्सव (अंगिका गीति-नाट्य), अंगश्री (अंगिका कविता संग्रह-सम्पादित), भक्ति पुष्पांजलि (हिन्दी एवं अंगिका के गीत-भजन), महात्मा भोली बाबा (सम्पादित), किसानः देशऽ के शान(अंगिका कविता संग्रह), अंग मधुरी के लेखक आरो कवि, ययाति (अंगिका काव्य), अंगिका के फैकड़े एवं लोरियां, श्री भुवनेश जी, श्री उमेश जी, श्री करीलजी, श्री विनोद जी, श्री उचित लाल जी, श्री अम्बष्ठ जी, एक साहित्यकार परिवार, तिलका सुन्दरी डार-डार, भक्तमाली जी के भोजपुरी भजन, भावांजलि, सावन सलोनी, श्री सीताराम लीलामृत, अंगिका आन्दोलन का इतिहास, हमरऽ संकीर्तन यात्रा, एब्लिन, घुघली घटमा, अंग जनपद गौरवः हलधर बाबा, मिलन, बाबा ठाकुर, सहित लगभग 65 पुस्तकें।
सम्प्रतिः सम्पादक 'अंग माधुरी', कई संस्थाओं के अध्यक्ष, महामंत्री, संयुक्त महामंत्री, सदस्य।
सम्पर्कः बोरिंग रोड पश्चिम, 59, गांधी नगर, पटना-01, मो0 9430919959

01
पीना चाहें तो
पीजिये भाई क्रोध
छोड़े विरोध।

02
धारण करें
जीवन में संतोष
न त्यागे होश।

03
अहंकार है
दुश्मन भयंकर
त्यागें सत्वर।

04
छोड़ दें ईर्ष्या
जो जलाती आप को
मारें सांप को।

05
खाइये गम
संकट होगा कम
मिटेगा तम।

06
संग्रह करें
हां, विद्या भरपूर
दुख काफूर।

07
दिखावें आप
दुखियों पर दया
बचेगी हया।

08
परखना है
तो परखिये बुद्धि
मिलेगी सिद्धि।

09
कीमती ज्ञान
लेना है तो लीजिये
खुली दुकान।

10
भर उमंग
सदा करें सत्संग
खिलेगा रंग।

11.
देना है तो दें
योग्य व्यक्ति को दान
मिलेगा मान।

12.
बोलिये सदा
सत्य जीवन भर
होंगे अमर।

13.
सफलता की
कुंजी है प्रसन्नता
मिले मान्यता।

14.
करें भजन
मगन आजीवन
धन्य जीवन।

शीघ्र संदेश सम्प्रेषण रचना

जेलर-सुना है तुम शायर हो, कुछ सुनाओ यार.
कैदी-ग़मे उल्फत में जो जिन्दगी कटी है हमारी, जिस दिन जमानत हुई, उस दिन जिन्दगी खतम तुम्हारी 8738001991

पग पग पर फूल खिले, खुशियां आपको संपूर्ण मिले, कभी ना हो दुखों का सामना, यही है हमारी शुभकामना 'हैप्पी दिपावली'
9335158956

दिल से दिल लगा के तो देखो, मेरी यादों में आंसू बहा के तो देखो, एस. एम.एस तो क्या काल भी करेंगें, दोस्त सिर्फ एक बार रिचार्ज करा के तो देखो.

देख मुखौटा डर लगता है

राजनीति का ताप भयानक
कुछ कहने से डर लगता है
धूप-हवा-लू बनकर आती
इस नखरे से डर लगता है।
सिंहासन पर बहुरूपियों का
रूप दिख कहा सहज सलोना,
इन लोगों से डर लगता है।
सौ सालों पर नया साल यह
कुछ आश्वासन लेकर आया,
पर सु-शासन मंत्र जप रहे
दुःशासन से डर लगता है।
विज्ञापन के आमंत्रण पर
छले गए कितने हमराही,
फरमाइश पर रचना करने
के खतरे से डर लगता है।
सत्ता में अब पूछ उन्हीं की
जिनकी पूछें बड़ी-बड़ी हैं,
छुट भैयों को रह रहकर अब
बड़ी पूंछ से डर लगता है।
नये नये हर रोज शिगूफे
मिडिया में भी आते रहते,
भरमाने वाली ये बातें
पढ़ते ही अब डर लगता है।
न्याय-नीति पर चिकने-चुपड़े
प्रवचनों की झड़ी लग रही,
लेकिन इन मीठे शब्दों में
भरे जहर से डर लगता है।
सभा-गोष्ठियां, सेवा-यात्रा
नित्य नये रूपों में जारी,
प्रवल वंचनामय सत्ता का
देख मुखौटा डर लगता है।

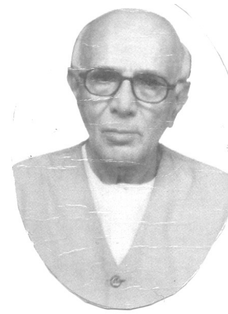

पं० जनार्दन प्रसाद द्विवेदी

जन्मः 14.05.1933, **शिक्षाः** बी.ए.आनर्स, एम.ए.(हिन्दी), डिप. इन एड., **सम्मानः** भारत भाषा भूषण, साहित्य महोपाध्याय सहित कई संस्थाओं से सम्मानित. **पुस्तकें:** विबोध, सम्बोधन, जो बीत गया, दस्तक देती शाम सहित लगभग 16 पुस्तकें. **सम्बंधताः** अध्यक्ष-महामना पं. मदन मोहन मालवीय सेवा समिति सहित कई संस्थाओं के सदस्य

सम्पर्कः प्रज्ञा-निकेतन, परा ज्योतिष केन्द्र, जय प्रकाश नगर, पटना-1, मो0 9430035160

वसुधा

दूर-दूर तक धरती फैली,
हरा भरा उसका आँचल।
देखो बादल ने भर दी है,
उसकी गोद उसका आँचल।
रसा रस को पी-पी कर,
वसुधा बनती जाती है।
रंग विरंगे फूल पौधों में,
अपना रूप दिखलाती है।
वर्षा आते ही धरा ने,
धानी चूनर ओढ़ लिया।
लगा उसे मानो इसने,
उसका ही स्वागत किया।
धानी चूनर पा ओस की बूँदे,
मोती जैसी दिखती हैं।
अम्बर की छाया भी उनमें,
प्रतिबिम्बित होती रहती है।
सारे जीव हुए आनन्दित,
नव जीवन फिर से छाया।
जग के सारे जड़ चेतन में,
पसर गई हरियाली माया।

डॉ० विद्या रानी

जन्मः 15 जनवरी 1954, **शिक्षाः** एम.ए.(हिन्दी), बी.एड., पीएच.डी, **प्रकाशित कृतिः** निबंधार्णव (निबंध संग्रह), रानी सारंगा, नटुआ दयाल, लचिका रानी, ऋष्यश्रृंग (उपन्यास), हम व्यतीत हो गए (कविता संग्रह), कारो कबूतर उजरो पांख (कहानी संग्रह), कौशल्या (खंड-काव्य)

सम्पर्कः आचार्या, हिन्दी विभाग, सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर, बिहार

अजब बेबसी

अजब बेबसी
सुनने वाला जीवन का दुख
कहां दीखता कोई?
शांति भीतरी,
उड़ती जाती
जाल बिछे
सम्मुख ये कैसे?
धैर्य बंधाने वाला,
कहां दौड़ता कोई?

मां की प्रेरणा

मां की प्रेरणा
बढ़ती उनको, उनको
या फिर उनकी।
व्यर्थ अहं का बोध।
जगत् लंबा-चौड़ा है,
सबका यहां गुजारा,
पर सबकी इच्छा
क्या होती पूरी?

डॉ० स्वर्ण किरण

पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हि.वि. किसान कॉलेज, सोहसराय, नालंदा-८०३११८, बिहार

धन्य देश भारत

कामधेनु नदियों की कलकल धारा वेद-मंत्र कहती है
त्यागमयी-सीता की छाया हर घर के आंगन रहती है
बल-विक्रम के तेज-पुंज से शंख फूंकता जिसका पौरूष
धन्य देश भारत वह जिसकी धरती पर गंगा बहती है।
X X X X X
दुनिया के सब देशों से यह मेरा सुन्दर देश बड़ा है
इस धरती का कोना-कोना धन-वैभव से भरा पड़ा है
गर्जन करतीं तीन तरफ से महादिधि की जल धाराएं
धन्य देश भारत वह जिसकी सीमा पर हिमराज खड़ा है।
X X X X X
एक राष्ट्र ऐसा भी जग में जिसकी जनता सराय हृदय है
सत्य अहिंसा से अभिमंचित फिर भी रहती सदा अभय है।
नए पंथ पर नई दृष्टि ले, नवविकास में नई सृष्टि दे
धन्य देश भारत वह जिसकी नीति हमेशाा सर्वोदय है।

डॉ० बिलास बिहारी

जन्मः28.03.1934, **शिक्षाः** एम.ए., सी. ए.आई.आई.बी एवं संगीत प्रभाकर, **कृतियांः** 3-गीत-नवगीत, 3-कहानी संग्रह, 5-उपन्यास के अलावा 13 पुस्तकें **सम्मानः** पं. सोहन लाल द्विवेदी बाल साहित्य पुरस्कार, भारत भाषा भूषण, समग्र बाल साहित्य, निराला स्मृति, साहित्यश्री, दिव्य रजत अलंकरण, विद्यावाचस्पति सहित लगभग दो दर्जन सम्मान

सम्पर्कः मनोरम-2/32, स्टेट बैंक कॉलोनी-2, खाजपुरा, पटना-800014, मो0 9431880754

भारतीय नेता

दीपावली पर
चूना पोतने वाले मजदूरों ने
सरकारी भवन की ऊँची दीवार पर उकेरे
भारत के मानचित्र पर
चूना पोतने से इनकार कर दिया।
नेताजी ने पूछा-
'क्या तुम काम करना नहीं चाहते?
तो उसने जवाब दिया-
'यह काम मुझसे नहीं होगा'
मैं केवल दीवालों को साफ कर
उस पर चूना लगाता हूं।
दीवाल पर खुदे भारत माता की तस्वीर
पर चूना नहीं लगाता हूं।
भारत माता पर चूना लगाने का काम
आप ही कर सकते हैं।

नृपेन्द्र नाथ गुप्त

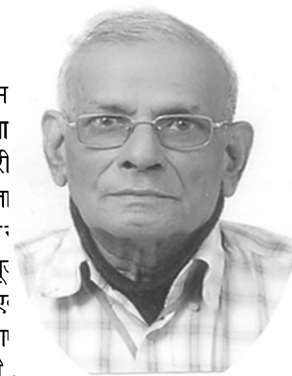

जन्मः 1.09.1934 **शिक्षाः** एम ए. (हिन्दी), विद्यासागर **सेवा** सेवानिवृत्त राजपत्रित पदाधिकारी **साहित्यिक अवदानः** दो कविता दो निबंध संग्रह प्रधा सम्पादक-भाषा भारती संवाद, न्यू बूलेटिन, देश की साहित्यिक ए दैनिक पत्र-पत्रिकाओं में रचना प्रकाशित, दूरदर्शन औ आकाशवाणी पटना से रचनाएं प्रसारित, **सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं में योगदानः** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-अखिल भारतीय भाषा -साहित्य सम्मेलन, अध्यक्ष-भारतीय भाषा साहित्य समागम, सम्पादक- नया भाषा-भारती-संवाद, पूर्व सीनेट सदस्य-पटना विश्वविद्यालय, विद्यासागर, भारत-भाषा-भूषण, वयोवृद्ध साहित्यकार सम्मान, साहित्यकार सम्मान, आदर्श दाम्पत्य जीवन सम्मान, भारत गौरव सम्मान, विवेकानन्द सम्मान, साहित्य गौरव, साहित्य निधि सम्मान, उत्कृष्ट साहित्यकार सम्मान

सम्पर्कः बरनवाल श्री उदित आयतन, ब्रह्मस्थान पथ, शेखपुरा, पटना-800014

हारून रशीद 'अश्क'

हिन्दी हैं हम हिन्दी ज़ुबा से प्यार करते हैं।
हमारे रक्त के क़तरे इसे तैयार करते हैं।।
दुनिया में हिन्दी की तरक्की हो रही यारो।
इसी से दुश्मनाने वक्त हरपल खैर खाते हैं।।
दानिशवरों ने हिन्दी की तारीख लिखी है।
इसी तारीख के जरिए सभी पर कहर ढ़ाते हैं।।
ग़रीबों, हुक्मरानों की ज़ुबां हिन्दी ही है यारो।
इसी भाषा के ज़रिए हम सभी को मात देते है।।
न छेड़ो इसकी ग़ैरत को दीवाने लाख हैं इसके।
ज़रा सी चीख सुनने पर सभी मिनल वार करते हैं।।
जिन्हें अंग्रेजियत प्यारी न उनसे कुछ भी है शिकवा।
ये अपनी कश्तिए हिन्दी को लेकर 'अश्क' बढ़ते हैं।।

हारून रशीद 'अश्क'

संपर्कः प्रोफेसर्स कॉलोनी, त्रिपोलिया, पटना-800007
मो0 09934278433

त्याग का सुख

बचपन में सुनी थी उसने कहानी
एक मां के प्यार की,
एक बच्चे के स्वामित्व
पर दो मांओं के अधिकार की!
दोनों का दावा था
बच्चा उसे ही मिलना चाहिए,
असली हकदार है वही,
असली मां है वही।
काजी जी ने दोनों की दलीलों को सुना
सोचा-विचारा और अंततः फैसला यह सुनाया।
बच्चा है एक, किन्तु दावेदार दो,
नहीं है अन्य कोई उपाय
बच्चा चीरकर आधा-आधा बांट दिया जाय।
दोनों माँओं ने सुना यह फैसला,
एक थी निश्चिंत, मुझे नहीं तो
दूसरी को भी नहीं मिला।
नहीं था उसे इस फैसले पर कोई मलाल,
निर्णय था उसे हृदय से स्वीकार।
असली माँ हतप्रभ रह गई,
मृत्यु की आशंका से
व्याकुल हो घबड़ा गई।
बोली-'बच्चा दूसरी का ही है,
उसे ही दे दीजिये,'
काजी से बार-बार यही गुहार लगाई।
निराश शिथिल कदम से
उद्यत हुई घर लौटने को,
अचानक काजी ने टोका,
जाने से उसे रोका।
बुलाया, समझाया, दिलासा दिया
और बच्चा उसे ही सौंप दिया।
पावों में पंख बांध समय पंछी उड़ चला,
दिन बीते, माह बीते,
और वर्ष अनेक बीत गये।
नन्हीं बच्ची बड़ी हुई,
शादी हुई, माँ बनी,
बेटा भी बड़ा हुआ
माँ अब सास बहू गई।
पुनः बेटे पर कब्जा के लिये,
हुई लड़ाई सास-बहु की।
घर की शांति हुई भंग
बदला घर का आमूल-चूल रंग।।
बेटा असहाय, मूकदर्शक बना
शून्य में ताकता रहा,
खाने लगी, मुस्कुराहट
गायब हो गई चंचलता।
दोनों के अधिकार की लड़ाई में
बेटा हुआ मायूस,
घर बन गया कुरुक्षेत्र।
माँ की ममता फिर रंग लाई,
उसने बेटे की खुशी में
अपनी खुशी मनायी।
इतिहास ने पुनः एक बार
अपने को दोहराया,
नियति का खेल समझ
माँ ने त्याग में ही सुख पाया।

श्रीमती गिरिजा बरनवाल
जन्मः 11.04.1941, **शिक्षाः** एम.ए. (हिन्दी), साहित्य रत्न, प्रशिक्षण शास्त्री **सेवाः** सेवा. राजपत्रित अधिकारी **साहित्यिक अवदानः** दो कविता, दो निबंध संग्रह, विश्व भाषा हिन्दी भारत में ही उपेक्षित, प्रधान सम्पादकः भाषा भारती संवाद, न्यूज बूलेटिन, दूरदर्शन और आकाशवाणी पटना से रचनाएं प्रसारित **योगदानः** उपाध्यक्ष-अखिल भारतीय भाषा-साहित्य सम्मेलन, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, अध्यक्ष-भारतीय भाषा साहित्य समागम, सम्पादक-नया भाषा-भारती -संवाद, पूर्व सीनेट सदस्य-पटना विश्व. विद्यासागर, भारत भाषाभूषण, वयोवृद्ध साहित्यकार, भारत गौरव, विवेकानन्द, साहित्य गौरव, साहित्य निधि, उत्कृष्ट साहित्यकार सम्मान,
सम्पर्कः बरनवाल श्री उदित आयतन, ब्रह्मस्थान पथ, शेखपुरा, पटना-800014
मो0ः 09470814200

उपाय

दबदबा है
साँडों का

सत्ता
रेले को
कोंचियाकर

इनका मार्ग
निष्कंटक
रखती है

सदा
रवानी-सी
घसिटती है

अघोरी
दृश्यों से
मुक्ति के लिए
चाहिए
एक अदद दंड।

✍ **डॉ० दुर्गाशरण मिश्र**
शिक्षाः एम.ए. (राज. शास्त्र), एम.ए.(हिन्दी) एल.एल.बी, पीएच.डी.(राज.शास्त्र)
संप्रतिः प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय

विमानपत्तन प्राधिकरण,
स्थायी निवासीः रोहतास, बिहार
वर्तमान पताः सी.ए.टी.सी, बमरौली, इलाहाबाद मो०:9792046333

एक प्रश्न

जान रही हूँ राम/कि तुम घट घट वासी
तुम व्याप्त सृष्टि के कण कण में
तुम सार्वभौम/ तुम सूर्य सोम/तुम धरा व्योम
गणिका को तारा तुमने औ
उच्छिष्ट बेर खायें शबरी के
क्लेश मिटाया हर दुखियारी अभिशप्ता का
एक प्रश्न, मैं पूछ रही पर राम बताओ
अग्निपरीक्षा क्यों ली थी तुमने सीता की?
आदर्शो की तप्त शिला में
जल जल कर तुम तपे/और निखरे कंचन से
बने सूर्य/आकाश मध्य अब भी ज्योतित हो।
पर सीता के मन का ग्रहण मिटा पाये क्या?
बूंद बूंद अपमानों का विष पीया सिया ने
उस विष को तुम अमृत कभी बना पाये क्या?
कह सकते हो/प्रजा हेतु
अपने सुख की बलि दी थी तुमने
किन्तु कहो, क्या सिया तुम्हारी प्रजा नहीं थीं?
जनरंजन आदर्श तुम्हारा था, यह सच है
किन्तु सगर्भा सीता को
बीहड़ वन में भेज, कौन सी मर्यादा
आदर्श कौन सा कहो बनाया तुमने?
सच मानो, यह वैदेही थी
दीपशिखा सी तिल तिल जलती
और तुम्हारी निशा को
काजल सी आंखों में भरती
अर्थवान कर कर तुमको
उसने ही राम बनाया
सच मानो, उसके सत ने
तुमको भगवान बनाया।

डॉ० शान्ति जैन

शिक्षाः एम.ए.(संस्कृत, हिन्दी), पीएच.डी, डी.लिट., संगीत प्रभाकर **सम्प्रतिः** सेवा.संस्कृत विभागाध्यक्ष, **सम्मानः** शंकर सम्मान, 'लोकगीतों के संदर्भ और आयाम' पुस्तक के लिए, के.के.बिड़ला फाउन्डेशन, राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान, 'लोकसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना' के लिये संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, बिहार कलाकार सम्मान, राजभाषा पुरस्कार, आकाशवाणी का राष्ट्रीय सम्मान **विशेषः** आकाशवाणी, दूरदर्शन की स्वीकृत गीतकार, कई भोजपुरी फिल्मों के लिए गीत लेखन, रामचरित मानस गायन में विशेष ख्याति **प्रकाशित कृतियांः** नौ-लोकसाहित्य, दो-प्रबंध काव्य, दो कविता संग्रह, चार- गीत संग्रह, तीन-रूपान्तर

सम्पर्कः 401, गिरि अपार्टमेन्ट, पूर्वी लोहानीपुर, कदमकुआँ, पटना-800003, बिहार मो० 9934271562

डॉ० भगवान सिंह 'भास्कर'

मुद्दत के बाद उनका जो पैगाम आ गया
था बेकरार दिल उसे आराम आ गया
दिनरात ढोते ढोते गमे जिन्दगी का बोझा
होठों पे मेरे आज तेरा नाम आ गया
एक बार भी न पूछी उसने मेरी खैरियत
मैं उसके दर से लौट के नाकाम आ गया
अमृत भरा प्याला मिला आज आपको
हिस्से में मेरे जहर भर जाम आ गया
हमने लहू पिलाया गुलों को तमाम उम्र
फिर भी हमारे नाम पर इल्जाम आ गया
ऐ 'भास्कर' उजाला गया तेरे वाम तक
सूरज मेरी वफा का तेरे काम आ गया।

जन्मः 20.10.1949, **सम्पादनः** साहित्य प्रहरी, उड़ान, बयार, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, नया भाषा भारती संवाद **पुस्तकेः** लगभग 33 पुस्तकें, **सम्मानः** साहित्य साधना सम्मान (21000रु०), निराला स्मृति सम्मान, साहित्य मनीषी, सम्पादक सरताज, अन्तर्राष्ट्रीय कवि शिरोमणि, संत तुलसी सम्मान, कबीर सम्मान, विद्या सागर, विद्या वारिधि आदि.

सम्पर्कः खादी भंडार के सामने गली, लखरावं, सिवान, बिहार-841226, मो० 09006650282

कालजयी दिनकर

हिन्दी-साहित्य-गगन का दिनकर दीप्तिमान
हा! हन्त! अचानक डूब गया वह विवस्वान
छाया सर्वत्र अभेद्य आज है अंधियारा
पड़ता न दिखायी कहीं दीप्त कोई तारा
दिनकर-किशोर कवि मादक मधुर उमंगो का
दिनकर-कोमल कवि मन की मृदुल तरंगों का
दिनकर-कवि रूप-छटाओं का, मलयज बयार
दिनकर-कवि सजल घटाओं का, रसमय फुहार
दिनकर-कवि फूलों का, श्री का सुषमाओं का
दिनकर-कवि छवि की नयी-नयी प्रतिमाओं का

दिनकर-बसता मन कवि का चाँद-सितारों में
दिनकर-हँसता मन कवि का मस्त बहारों में
दिनकर-जवान दिल में शोणित का उष्ण ज्वार
दिनकर-उद्वेलित उर की आंदोलित पुकार
दिनकर-पौरुष की आग, पराक्रम की ज्वाला
दिनकर-प्रचण्ड प्रज्वलित क्रांति, कवि मतवाला
दिनकर-जनता का कवि, जन-जन का हृदय-हार
दिनकर-ममता का कवि, मन में करूणा अपार
दिनकर-दीनों, दलितों, पिछड़ो की करुण आह
दिनकर-पीड़ित भारत मां की दारुण कराह
दिनकर-भारत का प्रखर राष्ट्रकवि तेजस्वी
दिनकर-चिंतक, लेखक, वक्ता अति ओजस्वी
दिनकर-कविता के प्राण, कला का आराधक
दिनकर-चिर 'सत्यं-शिवं-सुन्दरम्' का साधक
दिनकर-अतीत, भक्तिव्य, समागत वर्तमान
दिनकर-युग-द्रष्टा-स्रष्टा कवि-कल्पक महान
दिनकर-विशाल व्यक्तित्व, महाकवि कालजयी
दिनकर-विधि की रचना अपूर्व अनुरागमयी
ऐसे दिनकर का अन्त्! घोर छाया विषाद
विह्वल-विषण्ण मन क्या भूले, क्या करे याद
किस तरह नयन-जल को रोके भावुक प्राणी
कल्पना मौन, श्रीहीना कविता कल्याणी
श्रृंगार प्रकृति का लगता है उजड़ा-उजड़ा
रथ रोक उतर पथ में दिनकर हो गया खड़ा
असमय ही शाम उतर आयी, अति निविड़ निशा
विकराल रात्रि-भयभीत विकल है दिशा-दिशा
काया का परिवर्तन, 'दिनकर' तो अजर-अमर
मत हो निराश, होता न अस्त सचमुच दिनकर
जीवित है दिनकर, जब तक धरती और गगन
उस कालजयी कवि को सादर शतबार नमन।

डॉ० राम पुनीत ठाकुर 'तरुण'

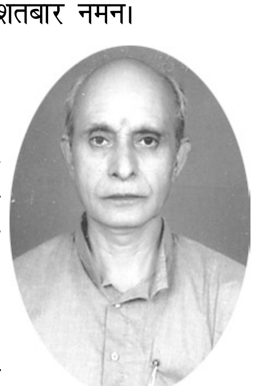

जन्मः 01.07.1950, **शिक्षाः** एम. एस.सी., बी.एड., पीएच.डी., **अन्यः** आकाशवाणी से रचनाओं का प्रसारण **पुस्तकेंः** गीत पचीसी, सुनो शिखर पुरुषा **सम्मानः** राष्ट्रीय शिक्षा शिखर व राष्ट्रीय सेवा सम्मान
सम्पर्कः श्रीकृष्णापुरी, गली नं01, आर. एन.ए.आर. कॉलेज रोड, समस्तीपुर-848101, बिहार मो०:09473135578

नमन 'आरसी'

जिसने सींचा है हिन्दी का सुन्दर चमन
ज्योति से जिसकी जगमग है सारा वतन
जिसने पाया था अरविन्द का करुणा-कण
कृष्ण चरणों में अर्पित सतत् जिसका मन
जिसकी सौवीं जयन्ती पे हम सब मगन
उस महाकवि को अर्पित है श्रद्धा सुमन
जिसकी कविताएं प्रेरक, हैं देती खुशी
जग विदित हाथ कंगन तो क्यों आरसी
काव्य रसमय कथा जिसके हिय में बसी
आज सौ साल के हो चुके 'आरसी'
कीर्ति फैली है तेरी अरुण-रश्मि-सी
दिल से करता हूँ शत-शत नमन 'आरसी'

पंकज कुमार देव

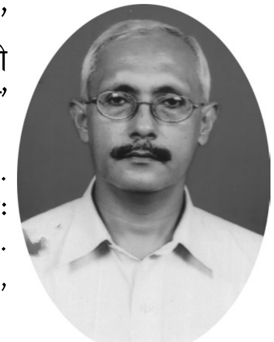

जन्मः 02.08.1961, **शिक्षाः** बी.काम. , एल.एल.बी, **पेशाः** अधिवक्ता **सम्पर्कः** 'महासुन्दरी स्मृति भवन', आर.एन.ए. आर. कॉलेज रोड, श्रीकृष्णापुरी, काशीपुर, समस्तीपुर, बिहार-848101 मो0 08987073366

अपने देश को बचा ले

सुनो-सुनो भारत के लोगों, मन में करो विचार।
भारत माता आहत है, भ्रष्टाचारी करते वार।।
भारत मां खड़ी है द्वार, कर रही रो-रो गुहार,
भाई रे, अपने देश को बचा ले।
भ्रष्टाचारी कटार, कर रही है हम पे वार,
भाई रे, अपने देश को बचा ले।
सत्य अहिंसा का देश, गौतम-गांधी का प्रदेश,
क्यों है भाई-भाई में, प्रेम नहीं, ईर्ष्या-द्वेष,
भूलें न हम देश में, हिन्द के परिवेश में
अमन-चैन आज भी है, ऋषियों के उपदेश में,
फिर लड़े हम क्यों बेकार, भाई दे भाई को प्यार,
करें प्रेम-शान्ति का व्यवहार, लाये सद्विचार
भाई रे, अपने देश को बचा ले।
धर्म जाति भाषा के लिए है शोर, चारों ओर
अलगाववाद पर है जोर सबका, पर कठोर,
टुकड़े-टुकड़े होने का नहीं है कोई कायदा
एक बने रहने में है, देश का ही फायदा,
भूल जायें यह ख्याल, बाद में न हो मलाल,

देश में गिराओ भाई मिलके आज प्रेमजाल
भाई रे, अपने देश को बचा ले।

राजकुमार प्रेमी

संप्रतिः सेवा. कार्या. अधीक्षक, आयकर विभाग, **अन्यः** एक दर्जन से अधिक संस्थाओं में विभिन्न पदों पर आसीन व कई संस्थाओं से सम्मानित**पुस्तकेः** सबरस गाना, गीत निर्झर व अप्पन गांव संग्रह **सम्पर्कः** रमना रोड, पटना-800004, बिहार मोः09835466667

जौहर डुमरावा

मैं जानता हूं चन्द सिक्कों पे ईमान बेच दोगे।
वतन की आबरू अमनो-आमान बेच दोगे।।
आतंकवाद के सिवा तुम जानते ही क्या हो।
मासूम बेगुनहाओं की मुस्कान बेच दोगे।।
तुम्हें क्या है फिकर सरसब्ज गुलसितां की।
दवा अगर लगे तो हिन्दुस्तान बेच दोगे।।
अभी तो धर्म मजहब का ठेकेदार बने हो।
मौका मिले तो गीता और कुरान बेच दोगे।।
नादान नहीं 'जौहर' रखते हैं जेहन हम भी।
देकर दिलाशा भारत की संतान बेच दोगे।।

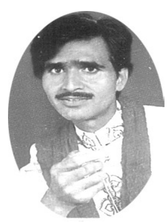

तिथिः 05.12.1967, **सम्मानः** ग़ज़ल रत्न, ग़ज़ल बादशाह सहित कुल 5 सम्मान **प्रकाशनः** अनेक पत्र-पत्रिकाओं एवं काव्य एवं काव्य संग्रहों में रचनाएं प्रकाशित **सम्पर्कः** अयोध्या सिंह की गली, डुमराव, बक्सर, बिहार-19 मोः09968049435

मन का मौसम

छन्द मनुज में
पिघल रहा है
मन का मौसम बदल रहा है।
आंगन के रिश्ते नाते भी
हाट बाजारों में सज गए
जिन आंखों ने स्वप्न दिखाए
जाने कभी के वे बिक गए।
कठिन वक्त के
इस समर में
देश का बचपन सिहर रहा है।
उड़ जाने को पंख लगाने
है कितनों में आपाधापी
गिर गिर जाए मनुज यहां पर
होगी उसकी नापानापी?
नयी चलन के
इस जहान में
बाग प्रीत का उजड़ रहा है।
मेंहदी रची हथेलियों में
शोर शराबे का ताजमहल
नहीं यहां पर तुलसी चौरा
केवल सपनों का शीशमहल
स्वर्ग रचित
इस दिव्य लोक में
मन का हिरना कहर रहा है!

अशोक 'आलोक'

साफ चेहरा कोई नजर आए,
एक अच्छी कभी खबर आए
पास आए तो बेखबर आए
हादसों में कहां नजर आए
उनसे कहिए तो और क्या कहिए
लोग शीशे में जब उतर आए
होंठ खामोश मौन हैं आँखें
जबकि मुश्किल कई सफर आए
टूट जाते हैं आजमाने में
कितने सपने हमारे घर आए।

सम्पर्कः सीओ इलाहाबाद बैंक, जमालपुर, मुंगेर-811214, बिहार

हारून रशीद 'अश्क'

तक़दीर का तमाशा है देखना ज़मी पर
अनमोल ज़िन्दगी का तोहफा मिला ज़मी पर।
माहौल जो बना है जीना बहुत है मुश्किल
शिकवा न ग़ैर से है अपनों से है ज़मी पर।
हासिल कमाल कुछ हो, ऐसी फिज़ा नहीं है
इस जाँ फिसाँ जहाँ में पाया न कुछ ज़मीं पर।
बेजान सारी दुनिया ग़ैरत नहीं ज़रा भी
जो दाग़दार जालिम हँसता वही जमीं पर।
भेजा है क्यों खुदा ने मकसद समझ लो यारो
गर 'अश्क' ठोस निकले सब कुछ मिले ज़मी पर।

संपर्कः प्रोफेसर्स कॉलोनी, त्रिपोलिया, पटना-800007

डा० शिवनारायण सिंह

जन्मः19.01.1962, **शिक्षाः** एम.ए -हिन्दी, एम.एड., पीएच.डी, **प्रकाशनः** साहित्यिक पत्रकारिता का साधु संग्राम, वृद्ध जीवन की कहानिया, रचना का जनपक्ष, संस्कृति का विवेक, हिन्दी विज्ञापनों का समकालीन विमर्श, कला साहित्य और समय सहित लगभग 32 पुस्तकें. **सम्मानः** नागार्जुन पुरस्कार- बिहार सरकार,विद्यावाचस्पति, विद्यासागर, पं. नरेन्द्र देव शिखर सम्मान, उद्भव शिखर सम्मान **सम्पर्कः** 305, अमन अपार्टमेंट, शांति निकेतन कॉलोनी, भूतनाथ रोड, पटना-800026, बिहार, मो० 09334333509

डॉ० कल्याणी कुसुम सिंह

जन्मः 10.12.1944 **शिक्षाः** पीएच.डी, एम.एड. डी.लिट, **संप्रतिः** व्याख्याता **भाषाः** हिन्दी, उर्दू, बंगला, अंग्रेजी **प्रकाशनः** पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित, दूरदर्शन तथा आकाशवाणी से रचनाओं का प्रसारण, स्वातंत्र्योत्तर महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी संदर्भ, नलिन विलोचन शर्मा की हिन्दी साहित्य को देन

सम्पर्कः द्वारा श्री चिन्टू मनीष ए.आर.एल, आदर्श आश्रम, आदर्श पथ-4, प्रोफेसर कॉलोनी, लालबाबू मार्केट के पास, पश्चिमी पटेल नगर, उत्तरी शास्त्री नगर, पटना-800023

बचपन, जवानी और बुढ़ापा

“जवानी दुखदायी होती है पर बुढ़ापा उससे भी अधिक दुखदायी होता है. यह एक जवान आदमी समझ नहीं पाता है, जब बुढ़ापा अपने आगोश में लेता है तो पता चलता है.” कहता हुआ यमुनमा मुस्कुराने लगा.

उसने फिर कहा “जानती है दुल्हिन, जब सैनी गोद में था तो मैं उन्हें बहुत करता था, गोद से नीचे तो उतारता ही नहीं था. आपके ससुरजी को भी मैंने खेलाया है, पर उस समय मैं भी छोटा ही था, करीब दस-बारह का रहा होऊँगा. पर मेरी शादी हो चुकी थी.” कहते-कहते वह रो पड़ा. शायद अतीत में खो गया.

“जानती है, कोलारी वाली मर गयी. आपको क्या पता होगा. कितने-कितने साल पर गांव आती हैं. वह बूंद भूंजते-भूंजते कनसारी में ही गिर गयी. शुक्र इतना ही हुआ कि जली नहीं. पृथ्वी बो देखी दौड़ कर आयी और उसे आंगन में ले आयी. पृथ्वीया के बेटे को तो आप जानती हैं न, वही पानी छींटा पर हार्ट फेल कर गया. वैद्यजी के आने से पहले ही चल बसी.”

मैं उसे धैर्य भी क्या बंधाती. कई सालों के बाद तो मैं गांव आयी थी, वह भी जेठानी का श्राद्ध था इसी कारण नहीं तो गांव से नाता तो कई दशक से छूट चुका था.

यह वही जमुनमा था जिसकी बोटी-बोटी चमकता था. काम को तो वह अंगूली पर नचाये रहता था. आज रोड पर छोटी-सी रस्सी से बंधी बकरी को चरा रहा था. बिल्कुल ठठरी बन गयी थी उसकी काया. पेट पीठ में सट गया था. हाथ-पैर समेटकर गठरी-सा घास पर बैठा था.

पुनः वर्तमान में लौटते हुए बोला-“यह बकरी पृथ्वीबो का है, वह देखिये सामने जो दूकान है उसमें बैठी है अब तो चाय भी बनाने लायक नहीं रही, पृथ्वीया अन्ध हो गया है रोड पर बैठा रहता है और लेमनचूस बिस्किट गमछे में रखकर बेचता है. छोटे बच्चे कभी-कभी तो उससे बेईमानी भी कर लेते है.”

थोड़ी देर सांस लेकर-“मैं तो निर्वंश था ही लगता है यह भी निर्वंश ही हो जायेगा. इसकी पतोहू भाग गयी. अब कौन इन तीन-तीन बुढ़े-बुढ़ियों को सम्हाले. अब बेटा ही खाना बनाता है, ज्यादातर खिचड़ी बनाकर रख देता है, वह भी तो थक जाता है. मजदूरी का काम करता है. दिन में तो हमलोग सतुआ खा लेते हैं, पहले हम लोग कन्सारी चलाते थे तो आपकी सास को हमसे ज्यादा किसी पर विश्वास नहीं था. कहती थीं कि तुम्हारी पत्नी जो सतुआ बनाकर देती है वैसा कही का स्वाद नहीं लगता, जांता के स्वाद का वर्णन हीं नहीं है, पर अब तो मिल का सतुआ बिना स्वाद का.” कहते-कहते वह चुप हो गया.

यह बड़बोला तो शुरू से था. हम लोग डरते रहते थे. इसके सामने नहीं होते थे. घूंघट डालकर सामने से गुजरते थे. पर इसकी पैनी नजर एक दिन हाजीपुर में स्टेशन पर केला खाते मुझे देख लिया. तुरत अम्मा से आकर बोला-“यहां तो घूंघटा पर घूंघटा डाल कर पुतोह के रखय छियै. वहां त हाजीपुर में दनादन केला खायत रहन, बउआ भी रहन.”

अम्मा मेरा पक्ष लेते हुए बोली थीं “तो यहां ससुराल में पर्दा है, हाजीपुर में क्या पता था कि तुम स्टेशन पर छिप-छिप कर देख रहे हो.”

एक नहीं कई घटनाएँ चलचित्र की तरह मेरी नज़रों के सामने से गुजर गयीं. हाथ में एक सौ का नोट था, मैंने उसे पकड़ा दिया.

आगे बढ़ी ही थी कि आहट से पृथ्वी पहचान गया. “प्रणाम मलकिनी”

मेरी कार आ चुकी थी. सामान रखा जा चुका था. लड़के जाने के लिए हार्न-पर-हार्न बजा रहे थे. मैं उसके हाथ में भी जल्दी से एक पचास का नोट पकड़ा कर उससे बिना कुछ कहे, जाते हुए कार में बैठ गयी. ज़िन्दगी ऐसे ही गुजतरी है, बचपन, जवानी और बुढ़ापा.

कहानी

जाल

-पी.सी.गुप्ता
जौहरी कोठी, समस्तीपुर-८४८१०१, बिहार

"भोला बाबू की शादी क्या हुई, उनका दिल उछलने लगा. पत्नी के आते ही घर में विभिन्न वस्तुओं का अभाव उन्हें खलने लगा. उनका सिर्फ दो शौक था-रेडियो सुनना और समाचार पत्र पढ़ना. उसी प्रकार उनका मात्र एक प्रिय साथी था जिसका नाम आनन्द किशोर था. पेशे से वे वकील थे. नाटे कद के आनन्द जी एक ओर चेन स्मोकर्स थे तो दूसरी ओर उनकी धूर्तता और जालसाजी का जबाब नहीं था. किस व्यक्ति की क्या कमजोरी है वे पलक झपकते हीं भांप लेते थे और यहीं कारण था कि भोला बाबू का कमजोरी भी वे भांप गये.

एक दिन बातों की बातों में आनन्द किशोर भोला बाबू से बोले-'दूसरे के यहां रेडियो सुनने जाना क्या आपको अच्छा लगता है? मैं कहता हूं कि आप एक रेडियो खरीद लें.

'रूपये कहां से आयेगें?' हंसते हुए भोला बाबू बोले.

'मैं आपको रुपये देता हूं. जब आपके पास रूपये आ जायेगा तो मेरा रूपया वापस लौटा दीजिएगा.' भोला बाबू आनन्द किशोर की बात सुन कर चुप हो गये लेकिन उनके मस्तिष्क में आनन्द जी की बात घूमती रही. आनन्द किशोर चुप रहने वाले व्यक्ति नहीं थे क्योंकि इससे उनकी चाल विफल हो जाती. एक-दो दिनों के अन्तर पर वे अपनी बात भोला बाबू के समक्ष दोहराने लगे और एक दिन उन्हें बोलना ही पड़ा-'मैं धीरे-धीरे आपका रुपया वापस करूंगा.'

'मैं भी तो यही बात कह रहा हूं. आज ही आप मेरे साथ मार्केट चलिए. यह शुभ कार्य आज ही हो जाना चाहिए.' आनन्द किशोर भोला बाबू को उत्साहित करते हुए बोले क्योंकि वे यह सुनहरा अवसर खोना नहीं चाहते थे.

भोला बाबू अपना कपड़ा पहन कर आनन्द किशोर के साथ मार्केट निकल गये. पहले वे 'एच.पी.घोष एण्ड सन्स' के दुकान पर पहुंचे. फिलिप्स का एक रेडियो भोला बाबू को पसंद आया जिसकी कीमत आनन्द जी दे दिये. फिर वे दोनो साईकिल के दुकान पर पहुंचे जहां एटलस साइकिल भोला बाबू पसंद किये और उसकी कीमत भी आनन्द जी चुका दिये. भोला बाबू के जीवन का यह सबसे अधिक खुशी का दिन था. घर में नई नवेली पत्नी जब रेडियो और साईकिल देखी तो वह भी खुश हो गई.

दूसरे ही दिन प्रातः आनन्द किशोर भोला बाबू के यहां पहुंच गये. उनका दिल खोल कर स्वागत किया गया. अपनी चिकनी चुपड़ी बातों के क्रम में आनन्द जी भोला बाबू से बोले-'आपको यदि कष्ट न हो तो एक कागज पर रेडियो और साईकिल की कीमत 500/ रुपये लिख दीजिए और यह भी लिख दीजिए कि यह रकम मैं आनन्द किशोर से लिया हूं. ऐसा करने से आपको भी याद रहेगा और मुझे भी.' 'क्यों नहीं' भोला बाबू यह कहते हुए उठे ही थे कि आनन्द जी एक कागज उनकी ओर बढ़ा दिये जिसके नीचे रेवन्यू स्टाम्प लगा था. आनन्द किशोर जैसाा बोले वैसा ही भोला बाबू ने लिख दिया और स्टाम्प पर अपना हस्ताक्षर कर दिया.

एक साल बाद अचानक एक दिन भोला बाबू को वकालतन नोटिस मिला जिसमें वकील ने यह दर्शाया था कि आप हमारे मुवक्कील आनन्द किशोर से पांच हजार रूपये लेकर अपने जमीन की महनदामा किया था उसकी अवधि पूरी हो चूकी है. अतः उक्त जमीन का केवाला कर दें. नोटिस पढ़ कर भोला बाबू के पैर से जमीन खिसक गया. अब उन्हें मालूम हुआ कि उनके दोस्त आनन्द किशोर के चिकनी-चुपड़ी बातें और रुपये कर्ज देने के पीछे उनकी क्या मंशा छिपी थी. उन्हें यह भी आश्चर्य हो रहा था कि उनका दोस्त जब रुपये कर्ज दिया था तब नोटिस में उनके जमीन के महदनामा की बात कहां से आई एवं उन्होंने सिर्फ पांच सौ रुपये लिए थे तो नोटिस में पांच हजार रूपये कैसे दर्शाया गया.

आनन्द किशोर ने भोला बाबू पर जमीन का केवाला शीघ्र कर देने के लिए मोकदमा कर दिया. अब दोनों की दोस्ती दुश्मनी में बदल गई. भोला बाबू जब न्यायालय में अपने मोकदमा का फाईल देखा तो पाया कि जिस कागज पर रुपये लेने की बात वे स्वीकार करते हुए हस्ताक्षर किये थे उसके ऊपर जो मजमून भरा गया है उसमें उनके जमीन का खाता और खसरा भी दिया गया है. इतनाा ही नहीं, जो राशि वे लिये थे उस पर एक शून्य और उसी कलम से बैठाया हुआ है.

मोकदमा चलना आरम्भ हो गया और भोला बाबू के वेतन का अधि ाकांश रकम उसमें बर्बाद होने लगा. सच्चाई जान कर पत्नी कुपित हो गई कि झूठा दिखावा एवं एक छोटा-सा

शौक के लिए पति महोदय ने कितनी बड़ी गलती की है.

निचली अदालत में मुंसिफ-मजिस्ट्रेट ने जब भोला बाबू के पक्ष में फैसला किया तो आनन्द किशोर ने जिला जज के यहां अपील कर दिया. वहां आनन्द किशोर के पक्ष में फैसला हुआ. विवस होकर भोला बाबू को पटना उच्च्व न्यायालय में शरण लेनी पड़ी. मुकदमें की कार्यवाही आरम्भ हो गई और तारीख पर तारीख पड़ने लगी. भोला बाबू के एक साढ़ू पटना में रहते थे इसलिए वे मुकदमा का बोझ उन पर डाल कर निश्चिन्त हो गये. उन्हें यह नहीं मालुम था कि रुपये का लालची साढ़ू उनके रूपये को खा कर कार्य नहीं करेगा. इस अवसर का लाभ आनन्द किशोर उठा लिये और एक तरफा डिग्री ले लिये.

जब भोला बाबू को अपने लालची साढ़ू के लालच और मुकदमा के प्रति लापरवाही की जानकारी मिली तो वे खिन्न हो गये. वे अपने साढ़ू गोपाल बाबू को जितना जलील करना था किये, परन्तु उन पर इसका कोई असर नहीं पड़ा. भोला बाबू की पत्नी जब अपने बहनोई को झाड़ पिलाई तो उनकी बहन को रहा नहीं गया तो वह पति द्वारा ली गयी रकम शीघ्र लौटाने का वादा कर मामला शांत कर दी.

भोला बाबू पटना उच्च्व न्यायालय में पुनः आनन्द किशोर पर मुकदमा कर दिये यह देख कर आनन्द किशोर सोचे कि यदि मुकदमा चलेगा तो फैसलें में बहुत समय लग जायेगा. अतः वे भोला बाबू को सुझाव दिये कि वे अपने भाई के साथ जमीन के बेचीनामा पर यदि हस्ताक्षर कर दें तो उन्हें दो लाख रूपये दे सकते हैं. भोला बाबू के भाई ने मांग कर दी कि जब तक उसे तीन लाख रुपये नहीं मिलेगा तब तक वह हस्ताक्षर नहीं करेगा. समझौता का मामला वहीं अटक गया. मुकदमा चल ही रहा था कि एक दिन भोला बाबू का निधन हो गया और मुकदमे के लिए पैसे नहीं होने के करण आनन्द किशोर के पक्ष में फैसला हो गया और आनन्द किशोर द्वारा बनाया गया जाल सफल हो गया और भोला बाबू जो वास्तव में भोला थे, एक छोटी सी भूमि एक महिला अधिवक्ता को ग्यारह लाख में बेच कर यह दिखा दिया कि उसके द्वारा बनाये गये जाल के सामने कोई नहीं टिक सका और उसकी जीत हो गई.

लघु कथाएं

विवेक

एक यात्री रेलवे स्टेशन पर बैठने की जगह देख रहा था. घूमते-घूमते वह करीब निराश हो गया था कि किसी पक्की बेंच पर उसे एक यात्री लेटा हुआ नज़र आया. पास जाकर देखा तो वह गहरी नींद में सोया था. उस बेंच के दोनों छोरों पर दो यात्री भी किसी तरह बैठे हुए थे. यात्री दुविधा में पड़ गया. उसे जगाकर बैठे या नहीं, उसके विचारों में उतार चढ़ाव होने लगा.

मन में बैठा अधिकार कहता-'यह जगह सोने हेतु नहीं, बैठने के लिए बनायी गयी है.' उसे जगाकर बैठने को कहो और खुद भी बैठ जाओ.'

कर्त्तव्य कहता-'बेचारे को नींद सता रही होगी. बेंच खाली देख सो गया. जगाकर उसे कष्ट मत दो.'

वह यात्री कुछ क्षण तक असमंजस में पड़ा खड़ा रहा. अंततः 'विवेक' ने अपनी सहमति जताया-'कर्त्तव्यमेव अधिकास्ते' यात्री वृद्ध था. खड़ा रहने में असमर्थ भी. फिर भी उसने विवेक के विचार का स्वागत किया. वह एक तरफ नीचे ही बैठ गया.

तीसरा राजा

एक अपरिचित साधारण वस्त्रधारी व्यक्ति को अपने दरवाजे पर आया देख उन्होंने पूछा-'आपका शुभ नाम?'

'मेरा नाम राजा है.'

'राजा?' उन्होंने आश्चर्य से कहा.

'क्यों? मेरा नाम गलत है क्या?'

'नहीं, नाम तो बहुत अच्छा है. लेकिन'

'फिर लेकिन क्या?'

'आप अपने माता-पिता द्वारा दिये गये नाम को सार्थक नही कर सके.'

'सो कैसे?'

'राजा का अर्थ होता है किसी क्षेत्र विशेष का शासक या धनाढ्य व्यक्ति. राजतंत्र है नहीं. अतः शासक रूपी राजा कोई हो नहीं सकता. पोशाकानुसार आप धनी-संतान भी नहीं लग रहे हैं.

'आपका कहना सही है. लेकिन एक तीसरा राजा भी होता है.'

'वह कौन?'

'मन का राजा'

'यानी उद्दंड-आवारा'

'नहीं. जिस प्रकार राजा का कर्त्तव्य जनता की सुरक्षा-भलाई करना होता है, उसी प्रकार जो व्यक्ति अपने शरीर की सुरक्षा एवं आत्मकल्याणार्थ अपने मन को वश में रखते हुए इंद्रियों को केवल कर्त्तव्यकर्म ही करने का आदेश देता है, वह मन का राजा है.'

-गणेश प्रसाद महतो
अध्यक्ष-ज्ञानोदय पुस्तकालय, कुशवाहा नगर, अम्मापाली-०६, भागलपुर, बिहार

आपकी डाक

अंक सादा लेकिन बेहद सलोना है

आदरणीय बन्धुवर

पं. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी

सादर प्रणाम।

यदा-कदा आपकी कृपा दृष्टि मेरी ओर भी हो जाती है और तब 'विश्व स्नेह समाज' पढ़ने का सौभाग्य भी प्राप्त हो जाता है. सितम्बर-१२ का अंक मिला. साभार धन्यवाद. अंक सादा लेकिन बेहद सलोना है. हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की भीड़ में आप पिछले ११ वर्षो से पूरी शिद्त के साथ जूझ रहे हैं. आपके इस अपराजेय पुरूषार्थ को सादर प्रणाम करते हुए बस यही कहने को जी चाहता है-

इस सादगी पे कौन न मर जाये ऐ खुदा/ लड़ते है गो कि हाथ में तलवार भी नहीं।

प्रस्तुत अंक में आलेख तो सभी महत्वपूर्ण है. हां कविता पक्ष विशेष प्रभावी नहीं रहा. फिर भी असंतोषजनक नहीं कहा जा सकता. तदुपरांत प्रेरक प्रसंग, बाल कोना, अध्यात्म, कहानी, फिल्मी, साहित्य समाचार आदि बहुविधि सामग्री संकलित/आकलित करके आपने पत्रिका को बहुजनपयोगी बना दिया है. मेरी ओर से आपको तथा अकंस्थ समस्त रचनाकारों को अशेष बधाईयां. शुभमस्तु!

प्रो० भगवानदास जैन,

बी-१०५, मंगलतीर्थ पार्क, कैनाल के पास, जशोदानगर रोड, मणीनगर पूर्व, अहमदाबाद-३८२४४५,

++++++++++++++++++++++

परम श्रेद्धेय

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी,

सादर प्रणाम

पत्रिका का अगस्त-सितम्बर अंक प्राप्त हुआ. अच्छा लगा. सम्पादकीय अच्छा लगा. अपने चिर परचित अंदाज में लिखा डॉ.गार्गी शरण मिश्र मराल का लेख कु 'भ्रष्टाचार कारण एवं निवारण' कुछ सोचने को मजबूर करता है. श्रीमती प्रमिला भारद्वाज की रचना 'मानव मशीन' अच्छी लगी. अच्छे सम्पादन के लिए बधाई स्वीकार कीजिएगा.

यशोधरा यादव 'यशो'

डी६६३/२१, कालिन्दी बिहार, आवास विकास कॉलोनी, आगरा, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++

सम्पादकीय सामयिक है

महोदय,

आप द्वारा प्रेषित पत्रिका का अंक मिला. कहानी, आलेख,व्यंग्य, काव्य द्वारा सभी कुछ तो हैं अक में. कहानी उखड़ी सिलाई विशेष पसन्द आयी. नरेन्द्र कुमार जी को बधाई. पर्यावरण का आलेख पाठकों को सच से रुबरू कराता है. इन सबसे अलग पत्रिका का आकर्षण है आपका संपादकीय. भागीरथ प्रयास के लिए साधुवाद

रितेन्द्र अग्रवाल

११/५००, मालवीय नगर, जयपुर -३०२३७, राजस्थान

+++++++++++++++++++++

आदरणीय अनुज श्री द्विवेदी

शुभाषी

प्रेम का दीप इस तरह से जले,
रश्मियां नेह की मिल जायं गले।
ताप आशीष का फैले ऐसे
कलुष गल जाये, मन से मन मिले।

डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय

लखनऊ, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++

प्रिय महोदय,

पत्रिका का अंक मिला. भ्रष्टाचार के गर्भ से जन्मी सरकार भ्रष्टाचार कैसे मिटा सकती है, दंभ भले ही भर सकती है. 'अपनी बात' में आज का यथार्थ है. उसकी कडुवाहट भी.

हम क्या है

क्यो होते हैं
आदमी के स्वभाव में
पशु पक्षियों के स्वभाव मिले हुए?
आदमी जन्मतः
नहीं होता आदमी
सिर्फ शक्ल होती है आदमी की
सरल भी नहीं आदमी होना
क्योंकि सिद्ध करना पड़ता है
आदमी का होना पन
उन गुणों को अपने में निखाकरकर
जो हमारे आदमी होने को
पुष्ट करते हैं
वरना हम होते हैं
कोई न कोई
पशु-पक्षी ही
जिसके गुणों की अधिकता
होती है हममें।

राधेलाल नवचक्र,

तोतासाह लेन, हसनगंज, मिरजान हाट, भागलपुर-८१२००५, बिहार

+++++++++++++++++++++

वर्ष नव! हर्ष नव

सब तरफ हो सुरभि, मुग्ध वातावरण।
वेदना, क्लेश, संताप का हो क्षरण।
है नया वर्ष, संवत नया आ गया।
हो नये ही नये चेतना के चरण।
हो प्रफुल्लित सभी आप, मैं, सृष्टि भी
हो कहीं भी दुखों की नहीं वृष्टि भी
मन प्रफुल्लित रहे, तन रहे उल्लसित
सर्वदानन्द देखें सदा दृष्टि भी।।
मंगलमय हो मानव जीवन सबका अन्तर
मंगलमय हो यह देश, ग्राम, घर और नगर
हर तरफ दृष्टि, मंगल, मंगल, मंगल देखे
शुभ हो, सुन्दर हो यह मंगलमय संवत्सर।।
सारे ही स्वप्न अपूर्ण पूर्ण हो जांय बन्धु।
दुख, कष्ट, क्लेश, सन्ताप चूर्ण हो जायं बन्धु!
नव संवत्सर में नयी चेतना जाग उठे
सुख शान्ति सुरभिमय विश्व पूर्ण हो जाय बन्धु!

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा,

८६, तिलक नगर, बाईपास रोड, फीरोजाबाद-२८३२०३

पत्रिका से सम्बन्धित अपने विचारों से हमें अवगत कराते रहें. इससे हमें इसे सुधारने में मदद मिलेगी.

संपादक

स्वास्थ्य

किडनी को खराब कर सकता है बढ़ा हुआ ब्लड प्रेशर

कम उम्र में रक्त चाप बढ़ने की समस्या हो तो यह किडनी में खराबी का संकेत हो सकता है और ऐसी अवस्था में किडनी की जांच कराकर समुचित इलाज कराना चाहिये.

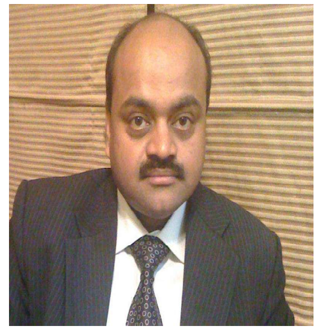

- डा. जितेन्द्र कुमार
प्रमुख, नेफ्रोलॉजी विभाग, एशियन इंस्टीच्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, फरीदाबाद

'रक्त चाप को अक्सर हृदय रोगों से जोड़ कर देखा जाता है लेकिन अगर कम उम्र में रक्त चाप बढ़ने की समस्या हो तो यह किडनी में खराबी का संकेत हो सकता है और ऐसी अवस्था में किडनी की जांच कराकर समुचित इलाज कराना चाहिये अन्यथा किडनी प्रत्यारोपण की नौबत आ सकती है.

उच्च रक्त चाप किडनी फेल्योर का प्रमख कारण है. इसे चिकित्सकीय भाषा में अंग्रिम अवस्था का गुर्दा रोग अथवा इंड स्टेज रीनल डिजीज (इएसआरडी) कहा जाता है जिसके मरीज को या तो नियमित रूप से डायलिसिस करानी पड़ती है या किडनी प्रत्यारोपण कराना पड़ता है. हमारे देश में मधुमेह का प्रकोप बढ़ने के साथ किडनी में खराबी की समस्या तेजी से बढ़ रही है और पिछले १५ वर्षों में किडनी की खराबी से ग्रस्त मरीजों की संख्या दोगुनी हो गयी है.

गंभीर किडनी रोग विश्व भर में खतरनाक बीमारी है लेकिन भारत जैसे विकासशील देश के लिये यह और गंभीर समस्या है क्योंकि इसका उपचार बहुत मंहगा है और यह जीवन भर चलता है. दुनिया भर में करीब दस लाख किडनी मरीजों को जीवित रहने के लिये डायलिसिस या प्रत्यारोपण कराना पड़ता है.

हर साल पूरे भारत में किडनी में खराबी की अंतिम अवस्था से ग्रस्त (एडवांस किडनी फेल्योर) होने के डेढ़ से दो लाख मामलों का पता चलता है. उन्होंने कहा कि २० से ३० प्रतिशत मधुमेह के मरीजों को किडनी समस्या होने की आशंका होती है. एक अनुमान के अनुसार २०३० में भारत में सबसे अधिक मधुमेह के मरीज होंगे और ऐसे में किडनी फेल्योर के मरीजों की संख्या में कई गुना इजाफा होगा।

रक्त चाप को सही रखने में किडनी की मुख्य भूमिका होती है। दूसरी तरफ रक्त चाप में गड़बड़ी होने पर किडनी पर असर पड़ता है. बढ़ा हुआ रक्त चाप किडनी को नुकसान पहुंचाता है और यह गंभीर किडनी रोग का कारण बनता है. रक्त चाप बढ़ने से किडनी सहित पूरे शरीर की रक्त नलिकाओं को नुकसान पहुंचता है. किडनी की रक्त नलिकाओं के नुकसान पहुंचने से शरीर से अतिरिक्त तरल एवं फालतू पदार्थों का निकलना बंद हो सकता है। इससे रक्त चाप और बढ़ जाता है। इस तरह से यह खतरनाक चक्र चलता रहता है.

खास तौर पर १५-२० साल की उम्र में रक्त चाप के बढ़ने की समस्या किडनी में गड़बड़ी के कारण होती है लेकिन अक्सर लोग जानकारी के अभाव में इसकी अनदेखी करते है लेकिन अगर किडनी में खराबी के कारण रक्त चाप बढ़ रहा हो तब तीन से चार महीने तक समुचित इलाज नहीं कराना घातक साबित हो सकता है। उन्होंने कहा कि इलाज कराने में तीन से चार महीने का विलंब होने से किडनी स्थायी रूप से खराब हो सकती है और ऐसी स्थिति में डायलिसिस या किडनी प्रत्यारोपण ही विकल्प होता है जबकि शुरुआती अवस्था में इलाज कराने पर कुछ हजार रुपये खर्च कर किडनी को खराब होने से बचाया जा सकता है.

किडनी की बीमारी खामोश बीमारी है जिसके कोई खास लक्षण नहीं होते हैं या ऐसे लक्षण होते हैं जो भ्रम पैदा करते है. जैसे पैरों में हल्का-हल्का सूजन आना. ऐसे में हम सोचते हैं कि पैर लटकाने के कारण या ज्यादा चलने के कारण सूजन आ गयी है. इसके अलावा पेशाब में प्रोटीन के आने के लक्षण की तरफ भी लोग ज्यादा ध्यान नहीं देते। पेशाब रुक-रुक कर होने या पेशाब में जलन होने या रात में बार-बार पेशाब के लिए उठने जैसे लक्षण को भी ज्यादा उम्र का प्रभाव समझ कर टाल दिया जाता है. इसके अलावा गैस या खाना हजम करने में दिक्कत जैसी समस्या को भी पेट की खराबी समझ कर टाल दिया जाता है। (मेडी मीडिया)

स्नेह आमंत्रण

साहित्य मेला–२०१३

कार्यक्रम-विवरण

साहित्य मेला का उदघाटन	प्रातः 9 बजे
बच्चो की काव्य गोष्ठी	प्रातः 9:30–11:00 बजे
परिचर्चा/खुली चर्चा	प्रातः 11:00 से 12 बजे तक
विषयः पर्यावरण संरक्षण में साहित्यकारों की भूमिका	
काव्य गोष्ठी	अपरान्ह 12:00 से 1:30 बजे तक
पुस्तकों का विमोचन/अभिनन्दन/सम्मान	अपरान्ह 2:30 बजे से 5 बजे तक

दिनांकः 17.02.2012 दिनः रविवार

स्थानः निराला सभागार (निराला आर्ट गैलरी), इलाहाबाद विश्वविद्यालय परिसर, डॉ० जी.एन.झा छात्रावास के बगल में, लक्ष्मी टाकीज के पास, कटरा, इलाहाबाद

विशेषः

01 कार्यक्रम स्थल रेलवे स्टेशन या बस स्टेशन से जिला कचहरी की टैम्पो पकड़कर पहुंचने पर वहां से पैदल का 5 मिनट का रास्ता है. यह टैक्सी स्टैंड से सीधे आगे बढ़ने पर जिला पुलिस मुख्यालय के सामने से लक्ष्मी टाकीज के ठीक बगल में चौराहा है उस चौराहे के दूसरे मोड़ से मुड़ने पर डॉ० जी.एन.झा छात्रावास है कार्यक्रम स्थल उससे बिल्कुल सटा हुआ है।

02 परिचर्चा में भाग लेने के लिए अपना आलेख 30 जनवरी 2013 तक भेज देवे. उसके बाद स्वीकार नहीं किया जाएगा. परिचर्चा में चयनित सहभागी को सम्मानित किया जाएगा।

03 बाल काव्य गोष्ठी में 15 वर्ष तक के बच्चे भाग ले सकेंगे. प्रतिभागी अपना नाम प्रातः ६ बजे कार्यक्रम स्थल पर दें.

04 काव्य गोष्ठी के लिए भी अपना नाम 30 जनवरी 2013 तक भेज देवें बाद में शामिल नहीं किया जाएगा।

05 अपने आगमन की सूचना 30.01.2013 के पूर्व कार्यालय को दे देवें जिससे आपके आवास व भोजन की व्यवस्था करने में सहूलियत हो. कार्यक्रम में सहभागी बनने के लिए 150/ रुपये पंजीकरण शुल्क रक्खा गया है। जिसमें आपको विश्व स्नेह समाज मासिक की एक वर्ष की निःशुल्क सदस्यता, आवास व भोजन की व्यवस्था समाहित है.

06 पंजीकरण शुल्क 'सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद' के नाम से धनादेश/डी.डी./बैंक ड्राफ्ट/चेक भेज सकते हैं अथवा संस्था के यूनियन बैंक ऑफ इडिया के खाता संख्या 538702010009259 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति संस्था के कार्यालय में भेज सकते है. पंजीकरण कार्यक्रम स्थल पर भी किया जायेगा लेकिन नाम पूर्व में ही भेजना होगा.

अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** 09335155949, **विजय लक्ष्मी विभाः** 09451181423 **महेन्द्र कुमार अग्रवालः** 9935959412 **ईश्वर शरण शुक्लः** 09935174896 पर संपर्क किया जा सकता है अथवा

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

कानाफुसी सं०-09335155949, इमेलः Sahityaseva@rediffmail.com

हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाने वालों को छात्रवृत्ति

हिन्दीत्तर भाषियों को सुश्री शांताबाई हिन्दी छात्रवृत्ति व हिन्दी भाषी राज्यों में स्व.पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति हिन्दी छात्रवृत्ति

इंटरमीडिएट व स्नातक स्तर पर हिन्दी विषय में 80प्रतिशत अंक पाने छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी. इसमें छात्र/छात्रा को इंटरमीडिएट व स्नातक स्तर के अंक पत्र की प्रधानाचार्य/प्राचार्य/विभागाध्यक्ष से प्रमाणित छाया प्रति, नाम, पिता का नाम, सम्पूर्ण पता, एक फोटो, दूरभाष/मोबाइल संख्या/ई मेल के साथ ३० जनवरी 2013 तक भेजना होगा. इसमें चयनित छात्रों को 100 रुपये से लेकर 500/रुपये मासिक तक की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी.

विशेषः

01 छात्रवृत्ति की संख्या का निर्धारण संस्थान द्वारा प्रत्येक वर्ष किया जाएगा। 02 हिन्दीत्तर भाषी छात्र/छात्राओं को वरीयता दी जाएगी. प्रत्येक वर्ष अंक पत्र भेजना अनिवार्य होगा. तब तक हिन्दी विषय में 80प्रतिशत या उससे अधिक अंक मिलते रहेंगे यह छात्रवृत्ति जारी रहेगी. 03 विवरण के साथ एक नाम पता लिखा लिफाफा, व २५ रुपये का डाक टिकट भेजना होगा. 04 जिस विद्यालय के छात्र/छात्राओं का चयन लगातार पांच वर्ष तक होगा उस विद्यालय के हिन्दी विषय के प्राध्यापक/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. 05 जो प्रतिभागी लगातार तीन वर्ष तक यह छात्रवृत्ति प्राप्त करेगा उसे हिन्दी उदय सम्मान से एक गरिमामय कार्यक्रम में सम्मानित भी किया जाएगा. अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव के लिए निम्नलिखित पते पर लिखें:

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.मो० 09335155949 **email:** sahityaseva@rediffmail.com

ये आग कब बुझेगी (भागः04)हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

ऊपर उद्धृत संग्रह मुख्य रूप से भ्रष्टाचार, शिक्षा, आतंकवाद व सामाजिक समस्याओं से सरोकार रखने वाले, विषयों से संबंधित आलेख/व्यंग्य/कहानियाँ/कविताएँ/ग़ज़ल/दोहे आदि आमंत्रित हैं. इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचनाएँ 1500 शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा 250/-रुपये अथवा तीन रचनाएं 500/- रुपये सहयोग राशि के साथ 30 सितम्बर 2013 तक अपेक्षित है. अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०ःएस.बी. 538702010009259 में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं. अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करें:

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93,

नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011

इमेलः sahityaseva@rediffmail.com

आओ लड़ें मिलावट से

बाजार में विभिन्न नामों से सस्ते देशी घी रहे हैं, असल में ये देशी घी नहीं बल्ि प्रोपरायटी फूड है जो पूरी तरह प्रतिबन्धित है. शुद्ध देशी घी के नाम पर बेचे जा रहे गोपाल, झूमर, अनमोल, महेश, रतन, स्वादिष्ट...आदि ब्रांड के देशी घी को खाने योग्य नहीं माना जाता. फूड सेफ्टी एक्ट के अनुसार प्रोपरायटी फूड का न तो कोई निर्माण कर सकता है और न ही बेच सकता है. इसके तहत आजीवन कारावास तक ही सजा का प्रावधान है. इन ब्रांडो के पैकेट पर देशी घी न लिखकर माइल्ड फैट, प्रीमियम फैट, लाइट फैट, पूजा फैट लिखा रहता है. ये इतने छोटे लिखे होते है जो ग्राहकों को नज़र नहीं आते. यह देखने में, पैंकिग और खुशबू में देशी घी ही लगता है. आईये पहचाने कुछ अन्य उत्पादों को भी.

घी और मक्खनः एक चम्मच घी या मक्खन लेकर उसमें बराबर मात्रा में हाइड्रोक्लोरिक एसिड व थोड़ी सी चीनी मिलाएं. अगर वर्तन की तली में एसिड का रंग लाल हो जाता है तो उसमें वनस्पति की मिलावट है.

हींगः शुद्ध हींग की लौ पर जलाने से लौ चमकीली हो जाती है. हींग को साफ पानी में धोने से यदि हींग का रंग सफेद या दूधिया हो जाए तो हींग शुद्ध होती है.

शहद- रूई के फाहे को शहद में भिगोकर उसे माचिस की तीली से जलाएं. यदि शहद में चीनी और पानी का मिश्रण है तो रूई का फाहा नहीं जलेगा और यदि शहद शुद्ध है तो चटक की आवाज के साथ जल उठेगा.

मिर्च पाउडर- मिर्च पाउडर को पानी

भरे गिलास में डाले. उसमें ईंट या बालू का चूर्ण होगा तो पेंदी में बैठ जाएगा. अगर सफेद रंग का झाग दिखे तो उसमें सेलखड़ी की मिलावट है.

धनियाः धनिया के पाउडर में अधिकतर घोड़े की लीद मिलाई जाती है. इसकी पहचान के लिए धनिया के पाउडर को पानी में घोल दें. ऐसा करने पर पाउडर में शामिल मिलावटी चीजें तैरने लगेगी.

दूध में यूरिया- दूध में यूरिया का पता लगाने के लिए टेस्ट ट्यूब में पांच मिली दूध लेकर उसमें कुछ बूंद ब्रोमोथइमोल ब्लू सलूशर डालें. दस मिनट बाद नीला रंग यदि दिखाई देता है तो मिलावट है.

मिठाई में मिलावट- मिठाई में पीला मेटेनिल (कोलतार रंग) मिलाया जाता है. मिलावट की जांच के लिए हलके गुनगुने पानी में नमूना डालें तथा उसमें हाइड्रोक्लोरिक अम्ल की कुद बूंदे मिलाएं. यदि लाल रंग दिखाई दे तो पीला मेटेनिल मिला हुआ है.

खाद्य तेल- सामान्यतः खाने के तेल में आर्जिमोन तेल की मिलावट की जाती है. इसकी पहचान करने के लिए नमूने में गाढ़ा नाट्रिक अम्ल मिलाकर हिलाए. अम्ल की तह पर यदि लाल भूरा रंग दिखाई दे तो आर्जिमोल तेल की मिलावट है.

हल्दी-एक चम्मच हल्दी में सांद्र हाइड्रोक्लोरिक अम्ल की कुछ बूंदे डाले. बैगनी रंग दिखता है और मिश्रण में पानी डालने पर यह रंग गायब हो जाता है तो हल्दी असली है, लेकिन रंग बना रहता है तो वह मिलावटी हल्दी है.

चीनी- चीनी में ज्यादातर चॉक मिलाया जाता है. इसकी पहचान के लिए चीनी को एक ग्लास पानी में घोलें मिलावट होने पर चॉक पाउडर नीचे बैठ जाएगा.

चाय पत्ती- चीनी-मिट्टी के बर्तन या शीशे के प्लेट पर नीबू का रस डाल कर उस पर चायपत्ती का थोड़ा बुरादा डाल दें. यदि नीबू के रस का रंग नारंगी या दूसरा होता है तो इसमें मिलावट है. यदि पत्ती असली है तो हरा मिश्रित पीला रंग दिखाई देगा.

दूध में पानी-दूध में पानी की मिलावट पता करने के लिए चिकनी सतह पर दूध की बूंद गिराएं. अगर पानी मिला है तो वह बिना कोई निशान छोड़े तेजी से आगे बह जाएगा. शुद्ध दूध धीरे-धीरे बहेगा और सफेद धब्बा रह जाएगा.

विश्व स्नेह समाज के १० वार्षिक सदस्य बनायें और २५०/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.
१० सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये ११००/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।

विश्व स्नेह समाज मासिक, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- २११०११, उ.प्र.

साहित्य समाचार

अभी न छोड़ो सभागार को, अभी तमाशा बाकी है

बिजनौर, उ.प्र. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के तत्वावधान में संस्थान के हिन्दी सांसद डॉ० हितेश कुमार शर्मा के निवास पर डॉ० रामस्वरूप आर्य की अध्यक्षता में एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया. जिसका संचालन हरीश कुमार शर्मा ने किया. गोष्ठी का शुभारम्भ जय नारायण अरुण ने किया. जगदीश चन्द्र वर्मा 'निरपेक्ष' ने सरस्वती वंदनाा की. श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा ने अपनी भक्तिमय रचना प्रस्तुत की. गिरिश त्यागी ने 'दिल है तेरी याद का बादल' कहकर लोगों के दिलो को बाग-बाग कर दिया तो आरिफ गांधी ने 'खामोशी है गरीबों के लबों पर मगर आंखों के आसू बोलते हैं.' हरीश कुमार शर्मा ने ' चांदी मत दो, सोना मत दो,ा कोई स्वप्न सलोना मत दो, मिट्टी की इक मूरत दे दो, चाबी भरा खिलौना मत दो. ' हितेश कुमार शर्मा ने 'अभी न छोड़ो सभागार को, अभी तमाशा बाकी है, जो हो चुका है या होना है, अभी खुलासा बाकी है.' काफी सराही गयी.

इसके अतिरिक्त वैद्य अजय गर्ग, शायर मरगूब रहमानी, डॉ० दिग्विजय सिह, रमेश राजहंस, अमीर नहटौरी, हसनैन नकवी, चन्द्रवीर सिंह गहलौत, डॉ० बुद्धि प्रकाश शर्मा, भोलानाथ त्यागी, डॉ० अनिल चौधरी, डॉ रघुनाथ प्रसाद शर्मा, डॉ० रामस्वरुप आर्य ने भी अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमूग्ध किया. गोष्ठी के अंत में श्री मंगूलाल भारद्वाज ने सुन्दर कोष्ठी के आयोजन के लिए सभी कवियों के प्रति आभार व्यक्त किया.

डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान

कहानी लेखन महाविद्यालय, अंबाला छावनी के संस्थापक एवं शुभ तारिका मासिक पत्रिका के संस्थापक संपादक डॉ. महाराज कृष्ण जैन की १२वीं पुण्य तिथि के अवसर पर पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी द्वारा डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान (५१), श्री केशरदेव गिनिया देवी बजाज स्मृति सम्मान (२), श्री जमनाधर पार्वती देवी माटोलिया स्मृति सम्मान (२), और श्रीमती सरस्वती सिंह स्मृति सम्मान (२) हेतु लेखक-कवि तथा हिन्दी के क्षेत्र में कार्य करने वाले कर्मचारी एवं अधिकारी, समाज सेवी, पर्यटन के इच्छुक भारतीय नागरिको से उनके योगदान का विवरण, पूरा पता एवं पंजीकरण शुल्क १००/ रुपये आगामी ३१ दिसम्बर २०१२ तक सचिव, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, पो. रिन्जा, शिलांग-७९३००६ के पते पर आमंत्रित है.

गुजारिश

1. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़ें, बल्कि दूसरों को भी इससे परिचित कराएँ. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएँ भेजें. उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. रचनाएँ पर्याप्त हासिया छोड़कर कागज के एक तरफ स्पष्ट सुपाठ्य अक्षरों में लिखी हुईं या टंकित होनी चाहिए. रचनाओं पर मौलिकता व उनके अप्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य करें. बिना उचित टिकट लगे जवाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती.

3. रचना प्रेषण के कम से कम तीन माह तक अन्यत्र प्रकाशित होने के लिए रचना न भेजें और न ही कहीं प्रकाशित रचना भेजने. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.

4. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/ धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.

5.जो रचनाएँ आपको अच्छी लगें उस बाबत रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.

6. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 या 09335155949 पर सम्पर्क करें.

7. विश्व स्नेह समाज मात्र एक पत्रिका नहीं है बल्कि समाज में एक रचनात्मक क्रांति लाने की माध्यम है. इसे हर सम्भव सहयागे प्रदान करें.❑संपादक

आवश्यक सूचना

विश्व स्नेह समाज के 12वर्ष पूरे करने पर सदस्यों के लिए विशेष योजना 01.10.2012 से 15.06.2013 तक वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पूणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति मुफ्त प्रेषित की जाएगी.

इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें

समीक्षा

मेरे भीतर महक रहा है ऐसा लगता है मुझको वो रजनीगंधा का पौधा लगता है

प्रेम शब्द एक ऐसा शब्द है जिस पर जितना भी लिखा व पढ़ा जाए वो कतत्तर साबित होगा. सदियों से लिखे जा रहे इस शब्द पर आज भी लिखे जा रहे हैं लेकिन इसकी महत्ता, आकर्षण, जीवतंता अपने शबो शबाब पर है. यह यह हर वर्ग के लिए पठनीय होता है. मनोज अबोध जी की प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह 'मेरे भीतर महक रहा है' भी प्रेम पर लिखी गयी है. इस प्रेम के इतने रूप है कि इसको ब्यां करना, शब्दों में बांधना बहुत ही सहज और दुरूह कार्य भी है. अबोध जी ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से इस पर काफी कुछ लिखा है. प्रेम की सघन उपस्थिति ही इस संग्रह को अलग पहचान देती है. इस संग्रह के अनेक शेर ऐसे है जो आम आदमी को प्रोत्साहन देने के काम आएंगे. इस संग्रह में कहीं चितन, दर्शन तो कहीं नये विचारों को खूबसूरती के साथ पिरोया गया है. बानगी के तौर पर संग्रह के कुछ शेर प्रस्तुत है.

यूँ लगता है दिल से जैसे धड़क रूठ गई/लिखना तुम भी, मुझसे बिछड़कर कैसा लगता है।

XXXXXXXXXXXXXXXX

आँखे छल-छल करती हैं, पर चेहरा है निश्चल-सा/बाबा जब तक घर में थे, इस साया था पीपल-सा।

XXXXXXXXXXXXXXXX

बदलते वक़्त के जो साथ चल भी सकता है/वही समाज की सूरत बदल भी सकता है।

XXXXXXXXXXXXXXXX

नींद जब मेरी खुले तेरे नयन की भोर हो/तेरी ज़ुल्फों की घनेरी रात का स्वागत करूँ।

XXXXXXXXXXXXXXXX

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

बहेगी देखना सुख-चैन की हवा फिर से/ कभी न सोचना, ये दुख सदा रहेगा ही।

XXXXXXXXXXXXXXXX

फूल खिलेगें फिर से सावन गाएगा/ जो सोचा है क्या वैसा हो पाएगा।

XXXXXXXXXXXXXXXX

हरिश्चन्द्र आते है बिकने/ ऐसे भी बाज़ार बहुत हैं/ मैना भी अब पिंजरे में/ कहने को अधिकार बहुत हैं।

मनोज अबोध जी के इस ९६ पृष्ठीय ग़ज़ल संग्रह में कुल ७८ ग़ज़ले हैं और इसका मूल्य १५०/रुपये है. इसे हिन्दी साहित्य निकेतन ने प्रकाशन कियाहै. अबोध जी ने इसे अपने माता-पिता को समर्पित किया है. ग़ज़लकार को ढेरो बधाई.

पत्थर बोलते हैं

प्रस्तुत संग्रह 'पत्थर बोलते है' मुखराम माकड़ 'माहिर' जी का ९६ पृष्ठीय संग्रह में कुल ८९ रचनाएं समाहित है. मुखराम माकड़ जी अच्छा लिखते हैं. उनकी रचनाएं प्रकाशनार्थ प्राप्त होती रहती है. कई किताबों को पढ़ने का सौभाग्य भी मुझे मिला है. उनके एक संग्रह को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान ने प्रकाशित भी किया है. बहुत ही सरल शब्दों में गम्भीर विषयों को अपनी रचनाओं के माध्यम से उठाना माकड़जी की विशेषता है. प्रस्तुत संग्रह को क्षणिकाओं का संग्रह करना अधिक न्यायोचित होगा. सद्गुरु में अच्छे गुरू को परिभाषित करते हुए लिखते हैः-

सच्चा गुरु/सूरज-सा/गगन-सा/ चाँद-सा/चंदन-सा।

'कवि' में रचनाकार लिखते है-

कवि/द्रष्टा-स्रष्टा/मनीषि-मनस्वी/ बांधता/शब्द-ब्रह्म को/मृदुल भाव-श्रृंखला में/गढ़ता रहता/ अनूठी तूलिका से/चित्र विचित्र नये-नये/ अक्षर के/ अमृत-से/ अमर बनाता।

'तस्वीर दर्द की' में दर्द के विभिन्न रुपों, भावों को बड़े ही सलीखे में शब्दों में पीरोते हुए कहते हैः-

कितना चाहता हूं/ कि खींच लूं तस्वीर दर्द की/पर क्या करूं/ भीतर कहीं/टिक-टिक कर रही/ बिना रूके घड़ी/ बाहर गिर रही हैं/ टप-टप बूंदे/ तड़फती/ और/ चारों तरफ/ भाप-दर्द की/ निंरतर उड़ रही/सब कुछ/ धुंधलाता जा रहा है/ फिर भी/तलाशा रहा हूं/ चटकीले रंग/ किन्तु देखता हूं कुछ रंग/बदरंग हो चुके हैं/ कुछ भींग गये हैं/ बाल कुछ सूख गये हैं/ कूची के/ चूहे कुतर गये हैं/ और/सिकुड़ गया है/मारे दर्द के/ कोना-कोना/ कैनवास का/ मैं / लाचार हो गया हूं/सही रूप दर्द का/ देख नहीं पाता हूं/तस्वीर/ बना नहीं पाता हूं।

एक आदमी और सड़क की तुलना 'सड़क और आदमी' में माकड़ जी कैसे की है देखिए-

बिछा रहा माटी/डाल रहा कंकरीट/ लिपटा कोलतार में/ बिछाता जा रहा/ कोलतार आदमी/ सरक रहा/ भाग रहा/ बेतहाशा/ गा रहा/रो रहा/सड़क पर आदमी/ टकरा रहा/ चोट खा रहा/ पिस रहा/ दमतोड़ रहा/घुल रहा गर्द में/सड़क पर/ आदमी

संग्रह अन्य कई रचनाएं भी पठनीय और विचारणीय है. बधाई।

प्रकाशकःकलासन प्रकाशन, बीकानेर
मूल्यः १५०/रुपये